दी नेक्स्ट पोस्ट

साप्ताहिक

7 | 3 हुक्का-बार में दरिंदगी | 5 अमृत स्नान | 8 चैंपियंस ट्राफी के लिए भारत की पासिबल टीम

UPHIN51019 | वर्षः 02, अंकः 30 | पृष्ठ संख्याः 8 | मूल्यः 1.00 रू. | सोमवार 20 जनवरी, 2025

मौनी अमावस्या

10 पर 10 करोड़ श्रद्धालु आएंगे

मुख्य स्नान पर किला घाट से संगम तक चलेंगी नाव

नाविकों के विरोध से मेला प्रशासन बैकफुट पर आया

प्रयागराज। पौष पूर्णिमा और मकर संक्रांति पर किला घाट से नावों का संचालन रोक दिया गया था। इसका नाविकों ने विरोध किया। अब 4 मुख्य स्नान बचे हैं। नाविकों के विरोध को देखते हुए मेला प्रशासन बैकफुट पर आ गया है। अब मौनी अमावस्या समेत 4 मुख्य स्नान पर किला घाट से संगम तक नाव का संचालन होगा।

भीड़ और सुरक्षा का हवाला देकर नाव नहीं चलने दी

नाविक संघ की ओर से बताया गया कि अर्धकुंभ और माघ मेला में किला घाट से श्रद्धालु नाव से संगम तक जाते थे। इस बार किला घाट से नाव संचालन पर रोक लगा दी गई। सिर्फ सरस्वती घाट या बलुआघाट से नाव चलाने की अनुमति दी गई थी। श्रद्धालुओं की भारी भीड़ होने पर सुरक्षा का हवाला देते हुए पुलिस-प्रशासन ने पौष पूर्णिमा और मकर संक्रांति पर किला घाट से नाव नहीं चलने दी।

नाविक बोले- आजीविका का संकट हो गया

प्रशासन के इस फैसले का नाविकों ने कड़ा विरोध किया था। नाव से संगम तक जाने के लिए पहुंचे श्रद्धालुओं को पैदल ही जाना पड़ा था। इसे लेकर नाविक संघ ने मेला अधिकारी से मुलाकात की। संघ के नेतृत्व में पहुंचे नाविकों ने बताया- इस व्यवस्था से हम हजारों नाविकों के सामने आजीविका का संकट खड़ा हो गया है। ब्र जल पुलिस रजनीश यादव ने बताया- मेला अधिकारी की ओर से मौखिक निर्देश मिला है कि मुख्य स्नान पर्वों पर किला घाट से नावों का संचालन होगा।

मौनी अमावस्या पर 10 करोड़ श्रद्धालु आ सकते हैंब्ड योगी ने मौनी अमावस्या पर करीब 8-10 करोड़ श्रद्धालुओं के महाकुंभ में आने की संभावना जताई है। उन्होंने निर्देश दिए हैं कि रेलवे से कोऑर्डिनेट करके ट्रेनों को चलाएं। मोबाइल नेटवर्क मजबूत करें। हर सेक्टर में 24 घंटे बिजली और पानी की सप्लाई बनाए रखें। घाटों की बैरिकेडिंग करें। हर जिले से बसें चलाएं। साथ ही प्रयागराज में ई-बसें, शटल बसें लगातार चलती रहें।

यमुना की धारा से एप्रोच बचाने को तैयार कर रहे त्रिस्तरीय सुरक्षा घेरा

गोरखपुर। गोरखपुर लिंक एक्सप्रेसवे पर बेलघाट के पास सरयू नदी की तेज धारा से एप्रोच को सुरक्षित करने के लिए सेतु निगम, त्रिस्तरीय सुरक्षा घेरा तैयार कर रहा है। एप्रोच के पास नदी में पहले दीवार की तरह शीट पाइल लगाई जा रही है, इसके बाद टेक्सटाइल ट्यूब लगाई जा रही है और फिर नदी की धारा को मोड़कर मुख्य धारा से जोड़ने के लिए ड्रेजर का चौनल बनाया जा रहा है। दो से ढाई माह में यह कार्य पूरा हो जाएगा, जिसके बाद बेलघाट के कम्हरियाघाट ओवरब्रिज पास बंद किए गए एक लेन पर भी आवागमन शुरू हो जाएगा। इस पूरे प्रोजेक्ट पर लिंक एक्सप्रेसवे का निर्माण करा रहा उत्तर प्रदेश एक्सप्रेसवेज औद्योगिक विकास प्राधिकरण (यूपीडा) 198 करोड़ रुपये खर्च कर रहा है। पहले गोरखपुर लिंक एक्सप्रेस-वे का निर्माण 31 दिसंबर, 2024 तक पूरा करने का लक्ष्य था। तय समय पर निर्माण कार्य पूरा भी हो गया, जिसके बाद उद्घाटन की तैयारी भी चल रही थी। लेकिन, पिछले माह बेलघाट के कम्हरियाघाट के पास सरयू नदी की धारा मुड़ने से ओवरब्रिज के एप्रोच के नीचे की मिट्टी कटने लगी।

इससे एप्रोच मार्ग पर दरार पड़ गई। सूचना मिलते ही यूपीडा ने संबंधित लेन पर आवागमन बंद कर दिया। मामले की गंभीरता को देखते हुए प्राधिकरण ने ओवरब्रिज बनाने की विशेषज्ञता वाले संस्थान उत्तर प्रदेश सेतु निगम से संपर्क साधा। निगम के एक विशेषज्ञ ने बीते पांच दिसंबर को मौके का निरीक्षण किया। इसके बाद

गोरखपुर लिंक एक्सप्रेसवे पर बेलघाट के पास सरयू नदी की तेज धारा से एप्रोच को सुरक्षित करने के लिए सेतु निगम त्रिस्तरीय सुरक्षा घेरा तैयार कर रहा है। इस प्रोजेक्ट पर यूपीडा 198 करोड़ रुपये खर्च कर रहा है। दो से ढाई महीने में यह कार्य पूरा हो जाएगा। नदी की धारा को मोड़कर मुख्य धारा से जोड़ने के लिए ड्रेजर का चौनल बनाया जा रहा।

13 दिसंबर को आइआइटी रुड़की से विशेषज्ञ बुलाए गए। निरीक्षण के बाद विशेषज्ञ ने बताया कि अगर नदी की धारा मोड़ने का कार्य नहीं कराया गया तो आने वाले समय में लिंक एक्सप्रेस-वे के ओवरब्रिज के एप्रोच को खतरा हो सकता है। सुरक्षा से समझौता नहीं करते हुए यूपीडा ने तत्काल एक बैठक बुलाई, जिसमें बैठक में नदी की धारा मोड़ने व एप्रोच को और मजबूत बनाने का निर्णय किया गया। सेतु निगम का यह जिम्मेदारी सौंपी गई।

निगम ने 198 करोड़ की परियोजना तैयार की जिसे यूपीडा ने तत्काल स्वीकृति देते हुए 50 करोड़ रुपये भी जारी कर दिए। सेतु निगम के अधिकारियों का कहना है कि सरकार की महत्वपूर्ण परियोजना होने की वजह से मौके पर तेजी से काम कराया जा रहा है।

दो से ढाई महीने में एप्रोच को पूरी तरह सुरक्षित कर लिया जाएगा।

पूर्वांचल एक्सप्रेसवे से जोड़ता है 91 किमी लंबा लिंक एक्सप्रेसवे

गोरखपुर। गोरखपुर लिंक एक्सप्रेसवे सहजनवां के पास जैतपुर से शुरू होकर पूर्वांचल एक्सप्रेसवे पर आजमगढ़ जिले के सालारपुर में जुड़ा है। 7283 करोड़ रुपये की लागत से तैयार 91.35 किमी लंबे इस एक्सप्रेसवे से गोरखपुर, अम्बेडकरनगर, संतकबीरनगर, आजमगढ़ जिले के लोग सीधे तौर पर लाभान्वित होंगे। औपचारिक रूप से इसका उद्घाटन अभी नहीं हुआ है, लेकिन आवागमन पिछले महीने से ही शुरू है। एप्रोच के नीचे की मिट्टी कट जाने के बाद कम्हरियाघाट के पास एक लेन के बंद होने के बाद दूसरे लेन से लोग आ-जा रहे थे।

30 एकड़ में बनेंगे दो यूटिलिटी सेंटर, हर सुविधा मिलेगी

आगरा और यमुना एक्सप्रेसवे की तरह गोरखपुर लिंक एक्सप्रेस-वे के किनारे भी दो जगह पर यूटिलिटी सेंटर का निर्माण कराया जाएगा। 30-30 एकड़ में प्रस्तावित इस सेंटर पर पेट्रोल पंप, सीएनजी पंप, होटल व रेस्त्रां के अलावा वाहनों की मरम्मत के लिए एक गैराज भी बनाया जाएगा।

पहला यूटिलिटी सेंटर गोरखपुर क्षेत्र में और दूसरा आजमगढ़ में होगा। लखनऊ, दिल्ली के साथ वाराणसी और प्रयागराज की राह भी आसान करने वाले इस लिंक एक्सप्रेसवे पर भविष्य में ट्रैफिक लोड काफी बढ़ने की उम्मीद है। इसे देखते हुए ही (यूपीडा) बोर्ड की बैठक में दोनों यूटिलिटी सेंटर बनाने का निर्णय किया गया है।

सर्द पछुआ हवा ने बदला गोरखपुर के मौसम का मिजाज

धूप पर लगा बादलों का पहरा तो बढ़ गया ठंड का अहसास,तापमान में मात्र 24 घंटे में दर्ज की गई छह डिग्री की गिरावट

गोरखपुर में सर्द पछुआ हवा ने मौसम का मिजाज बदल दिया है। पारा गिरने से ठंड बढ़ गई है। अधिकतम तापमान 24 घंटे में करीब छह डिग्री सेल्सियस गिर गया है। मौसम विज्ञानियों के अनुसार पश्चिमी विक्षोभ की सक्रियता के चलते मौसम में यह बदलाव हुआ है। अगले दो से तीन दिनों तक कड़ाके की ठंड पड़ने का अनुमान है।

संवाददाता, गोरखपुर।ठंड का मौसम रह-रह कर अपना रंग दिखा रहा है। कभी पारा चढ़ाकर राहत दे रहा तो कभी गिराकर तकलीफ बढ़ा रहा। बीते तीन से लगातार ठंड से राहत महसूस कर रहे लोगों की मुश्किलें मंगलवार को एक बार फिर तब बढ़ गईं, जब दोपहर बाद सर्द पछुआ हवा चलने लगी। पारा गिरने लगा और ठंड बढ़ने लगी। धूप पर बादलों के पहरे के चलते ठंड का अहसास और बढ़ गया। गलन भरी ठंड का माहौल बन गया। अधिकतम तापमान तो मात्र 24 घंटे में करीब छह डिग्री सेल्सियस गिर गया। मौसम विज्ञानी कैलाश पांडेय के अनुसार मौसम में यह बदलाव पश्चिमी विक्षोभ की सक्रियता के चलते हुआ है। पश्चिमी विक्षोभ तिब्बत की ओर बढ़ा है, जिसके चलते पश्चिमोत्तर के पहाड़ों पर बर्फबारी का सिलसिला एक बार फिर शुरू हुआ है। पहाड़ों की ठंड 15 से 20 किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ्तार से चल रही पछुआ हवा के साथ पूर्वी उत्तर प्रदेश तक पहुंच रही है। इसके प्रभावस्वरूप ही गोरखपुर में अचानक एक बार फिर ठंड बढ़ गई है। मंगलवार को अधिकतम तापमान 17.7 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड हुआ, जो मात्र एक दिन पहले सोमवार को 23.3 डिग्री सेल्सियस था। मौसम विज्ञानी के अनुसार फिलहाल यही वायुमंडलीय परिस्थितियां अगले दो से तीन दिन तक बनी रहेंगी, ऐसे में कड़ाके की ठंड पड़ती रहेगी। अधिकतम के साथ-साथ न्यूनतम तापमान भी गिरेगा। सुबह लेकर देर रात तक गलन भरी ठंड पड़ने का सिलसिला चलेगा। अधिकतम तापमान के 16 से 18 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान के छह से आठ डिग्री सेल्सियस के बीच रिकार्ड होने का पूर्वानुमान मौसम विज्ञानी जता रहे हैं। आर्द्रता बढ़ने के चलते रिकार्ड तापमान से अधिक की ठंड के अहसास होने की आशंका बता रहे।

रिंकू सिंह और सांसद प्रिया सरोज की ऐसे हुई थी दोस्ती..

वाराणसी। समाजवादी पार्टी की मछलीशहर से सांसद प्रिया सरोज और क्रिकेटर रिंकू सिंह शादी के बंधन में बंधने जा रहे हैं। प्रिया के पिता तूफानी सरोज ने बताया कि शादी के सिलसिले में रिंकू के पिता से बृहस्पतिवार को अलीगढ़ में बात हुई है। क्रिकेटर रिंकू सिंह जल्द ही शादी के बंधन में बंधने वाले हैं। उनकी दुल्हनिया उत्तर प्रदेश से समाजवादी पार्टी की युवा सांसद हैं। सोशल मीडिया पर उड़ी अफवाहों के बीच सांसद के पिता और सपा के विधायक तूफानी सरोज ने इस बात को सिरे से नकार दिया। हालांकि उन्होंने यह जरूर कहा कि रिंकू और उनकी बेटी के रिश्ते को लेकर बात हुई। लेकिन हम इस रिश्ते पर विचार कर रहे हैं। यह शादी का मामला है, इसलिए बहुत कुछ सोच समझकर ही निर्णय लिया जाएगा। समाजवादी पार्टी की मछलीशहर से सांसद प्रिया सरोज और क्रिकेटर रिंकू सिंह शादी के बंधन में बंधने जा रहे हैं। संसद सत्र के बाद सगाई और शादी की तारीख तय होगी। लखनऊ में ही सगाई होगी। प्रिया के पिता और जौनपुर की केराकत विधानसभा क्षेत्र से सपा विधायक तूफानी सरोज ने बताया कि शादी के सिलसिले में रिंकू के पिता से बृहस्पतिवार को अलीगढ़ में बात हुई है।

हम 20-25 मिनट के अंतर से...

दिल्ली। बांग्लादेश में पिछले साल हिंसा भड़कने के बाद शेख हसीना अपने पद से इस्तीफा देकर भारत चली गई थीं। अब उन्होंने इस पूरे मामले पर कई बड़े खुलासे किए हैं। बांग्लादेश पांच अगस्त की तारीख को इतनी आसानी से नहीं भुला सकेगा। उस समय शेख हसीना को प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा और देश छोड़कर भारत जाना पड़ा था। उसके बाद से यहां के हालात बदतर बने हुए हैं। हिंदुओं के घरों और व्यापारिक प्रतिष्ठानों को निशाना बनाया जा रहा है। अब इस पूरे मामले पर पूर्व पीएम शेख हसीना ने बड़ा आरोप लगाया है। उनका कहना है कि सत्ता से बेदखल होते ही उनकी और उनकी छोटी बहन शेख रेहाना की हत्या की साजिश रची गई थी। फेसबुक पर अपनी पार्टी बांग्लादेश अवामी लीग के पेज पर एक ऑडियो संदेश में यह बड़ा दावा किया। उन्होंने कहा, रेहाना और मैं बच गए, हम केवल 20-25 मिनट के अंतराल से मौत से बच गए।

क्या है मामला ?

दरअसल, पिछले साल प्रदर्शनकारी छात्र विवादित आरक्षण प्रणाली को समाप्त करने की मांग कर रहे थे। इसके तहत बांग्लादेश के लिए वर्ष 1971 में आजादी की लड़ाई लड़ने वाले स्वतंत्रता संग्रामियों के परिवारों के लिए 30 प्रतिशत सरकारी नौकरियां आरक्षित की गईं हैं। मगर, सरकारी नौकरियों में आरक्षण के मुद्दे पर शुरू हुए विरोध प्रदर्शन ने देशभर में उग्र रूप ले लिया था। इसके बाद हालात बद से बदतर हो गए और पीएम शेख हसीना को अपने पद से इस्तीफा देकर भारत भागना पड़ा था। इस दौरान 600 से अधिक लोग मारे गए थे। 76 साल की हसीना के सत्ता से हटने के बाद नोबेल पुरस्कार विजेता मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व में एक अंतरिम सरकार का गठन किया गया था।

सम्पादकीय

तीर्थाटन और पर्यटन

बोरिया–बिस्तर बांधना एक पुराना मुहावरा है लेकिन इसका अर्थ हमेशा एक–सा नहीं रहा

आज तीर्थाटन पर्यटन में बदल गया है। सैर–सपाटे पर जाने का, या कहें विज्ञापन छापकर जबरन सैर करवाने का पूरा एक नया उद्योग खड़ा हो चुका है। तीर्थयात्राएं अभी भी हो रही हैं, पर वे भी इसी पर्यटन का हिस्सा बन गई हैं। उन्हें बाजार की पैसा कमाने वाली व्यवस्था ने निगल लिया है। उत्तर से दक्षिण तक के बड़े–बड़े मंदिर, तीर्थ–स्थान अब कंप्यूटर से जुड़ गए हैं। ई–आरती, ई–बुकिंग, ई–दर्शन, ई–यात्रा – भगवान का सब कुछ बाजार ने अपनी लालची तिजोरी में डाल लिया है। बोरिया–बिस्तर बांधना एक पुराना मुहावरा है, लेकिन इसका अर्थ हमेशा एक–सा नहीं रहा। एक जगह से ऊब गए तो बोरिया–बिस्तर बांध चल पड़े देशाटन को। जी हां, तब पर्यटन शब्द चलन में नहीं था, पर देशाटन के लिए निकलने वालों की कोई कमी नहीं थी। अपने आसपास या दूर को जानना–पहचाना, लंबे निकल जाना और लौटकर बिना बुद्धू बने घर वापस आना खूब चलता था। इस देशाटन में दिशाएं, पड़ाव या मंजिल, कुछ भी तय नहीं रहता था। तीर्थाटन इससे बिल्कुल अलग था। दिशा, जगह, पड़ाव, मंजिल, मौसम सब कुछ तय रहता था। तीर्थ सब दिशाओं में थे। सचमुच उत्तर, दक्खिन, पूरब और पश्चिम। तीर्थ भी सब धर्मों के– केवल हिंदुओं के नहीं, जिनमें अन्य धर्मों के लोग भी आते–जाते थे। हर पीढ़ी की ऐसी इच्छा होती कि अपनी अगली पीढ़ी के हाथों घर–गिरस्ती सौंपने से पहले एक बार इनमें से कुछ तीर्थों के दर्शन कर ही लें। शरीर में सामर्थ्य हो तो अपने दम पर, नहीं तो श्रवण कुमारों की भी कोई कमी नहीं थी जो अपने बूढ़े माता–पिता को श्बहंगीश में उठाकर सब दिखा–घुमा लाते थे।

ये तीर्थ भी दो तरह के माने गए थे। एक श्स्थावरश यानी किसी विशेष स्थान पर बने, जहां लोगों को पुण्य कमाने खुद ही जाना पड़ता था। लेकिन कुछ ऐसे भी तीर्थ थे, जिन तक जाना नहीं पड़ता था – वे आपके घर–दरवाजे स्वयं आकर दस्तक देते थे। ऐसे तीर्थ श्जंगम–तीर्थश कहलाते थे – यानी चलते–फिरते तीर्थ। समाज में बिना स्वार्थ साधे सबके लिए कुछ–न–कुछ अच्छा करते–करते कुछ विशेष लोग संत, विभूति श्जंगम–तीर्थश बन जाते थे। उनका घर आ जाना तीर्थ जैसा पुण्य दे जाता था। समय के साथ बहुत–सी चीजें, व्यवस्थाएं बदलती हैं। सब कुछ रोका नहीं जा सकता, लेकिन हमें पता तो रहे कि हमारे आसपास धीरे–धीरे या खूब तेजी से क्या–कुछ बदलता जा रहा है। आज के पर्यटन से पहले देशाटन और तीर्थाटन था और सब जगह इसके साथ एक पूरी अर्थ–व्यवस्था थी। उससे तीर्थों के आसपास के अनगिनत गांव, शहर भी जुड़े रहते थे। वह आज के पर्यटन उद्योग की तरह नहीं था। एक तरह का ग्रामोद्योग या कुटीर उद्योग था। उदाहरण के लिए बदरीनाथ या हिमालय की श्चार धाम यात्राश को ही लें। यह तीर्थ यात्रा साल में कोई छह महीने चलती थी। पूरे देश से लोग यहां आते थे। हिमालय में तब सड़कें नहीं थीं। मैदान में बसे हरिद्वार या ऋ षिकेश से शुरु होकर सारी यात्रा पैदल ही पूरी की जाती थी। प्रारंभिक पड़ाव में धर्मशालाएं थीं। उसके बाद ठहरने, रुकने, खाने–पीने का इंतजाम रास्ते के दोनों तरफ पड़ने वाले छोटे–बड़े गांवों के हाथों में ही रहता था।

पूरा देश स्वर्ग जाने वाली इन छोटी–छोटी पगडंडियों से पैदल ही चढ़ता–उतरता था। हां, कुछ लोग तब भी सामर्थ्य, मजबूरी आदि के कारण पालकी, डोली या खच्चर का प्रयोग कर लेते थे। इंदौर रियासत की अहिल्याबाई पालकी से ही बदरीनाथ गई थीं और आज के चमोली जिले के पास गोचर नामक एक छोटे–से कस्बे में अपनी उदारता, जीवदया और किसानों की जमीन के अधिग्रहण के कुछ सुंदर नमूने आज के नए राजा–रानियों के लिए भी छोड़ गई थीं।

यह सारा रास्ता मील में नहीं बांटा गया था। कहां पगडंडी सीधी चढ़ाई चढ़ती है, कहां थोड़ी समतल भूमि है, कितनी थकान किस हिस्से में आएगी, उस हिसाब से इसके पड़ाव बांटे गए थे। इतनी चढ़ाई चढ़ गए, थक गए तो सामने दिखती थीं सुंदर चट्टियां। चट्टी यानी मिट्टी–गोबर से लिपी–पुती सुंदर बड़ी–बड़ी, लंबी–चौड़ी सीढ़ियां। रेल के पहले दर्जे की शायिकाओं जैसी अनगिनत सीढ़ियां। इन पर प्रायरू साफ–सुथरे बोरे स्वागत में बिछे रहते थे।

लोग अपने साथ कुछ हल्का–फुल्का बिछौना लाए हैं तो उसे इन चट्टियों पर बोरे के ऊपर बिछाकर आराम करेंगे। नहीं तो गांव के कई घरों से गद्दे–तकिए, रजाई, कंबल, मोटी ऊन की बनी दरियां नाममात्र की राशि पर प्रेम से उपलब्ध हो जाती थीं। इन दरियों को श्दनश कहा जाता था। गलीचे, कालीननुमा ये श्दनश इतने आकर्षक होते थे कि यात्रा से लौटते समय इनमें से कुछ के सौदे भी हो जाते थे। हाथ के काम का उचित दाम बुनकर को मिल जाता था। इन सेवाओं का शुल्क भी बाद में ही आया। शुरू में तो एक–सी सुविधा का दाम अलग–अलग लोग अपनी हैसियत और इच्छा, श्रद्धा से चुकाते थे।

इन्हीं चट्टियों के किनारे के गांव अपने–अपने घरों से फल, सब्जी, दूध–घी, आटा, दाल, चावल, गरम पानी आदि का इंतजाम किया करते थे। पूरे देश के कोने–कोने से आए तीर्थयात्रियों की छह महीने की यह मौसमी अर्थव्यवस्था पहाड़ों की सर्दी को थोड़ा गरम बनाए रखती थी। आजादी के बाद इन पैदल रास्तों के किनारे धीरे–धीरे मोटरगाड़ी जाने लायक सड़कें बनने लगीं, पर अचानक 1962 में चीन की सीमा पर हुई हलचल ने इस काम में तेजी ला दी। धड़ाधड़ सड़कें बनती गईं, पगडंडिया उजड़ती गईं। इस शानदार व्यवस्था की कुछ स्मृति बदरीनाथ मंदिर से थोड़ा नीचे बनी हनुमान चट्टी पर अभी भी छिपी है। इन चट्टियों की विदाई से तीर्थ क्षेत्र के पैदल रास्ते के दोनों ओर बसे गांवों में कैसी उदासी छायी होगी – इस पर उत्तराखंड के विश्वविद्यालयों, सामाजिक संस्थाओं ने शायद ही कभी ध्यान दिया हो।

आज तीर्थाटन पर्यटन में बदल गया है। सैर–सपाटे पर जाने का, या कहें विज्ञापन छापकर जबरन सैर करवाने का पूरा एक नया उद्योग खड़ा हो चुका है। तीर्थयात्राएं अभी भी हो रही हैं, पर वे भी इसी पर्यटन का हिस्सा बन गई हैं। उन्हें बाजार की पैसा कमाने वाली व्यवस्था ने निगल लिया है। उत्तर से दक्षिण तक के बड़े–बड़े मंदिर, तीर्थ–स्थान अब कंप्यूटर से जुड़ गए हैं। ई–आरती, ई–बुकिंग, ई–दर्शन, ई–यात्रा – भगवान का सब कुछ बाजार ने अपनी लालची तिजोरी में डाल लिया है। शायद भगवान भी आने वाले दिनों में ई–कृपा बांटने लगें। ऐसा नहीं है कि सड़कें आनंद के स्वर्ग तक नहीं ले जातीं, लेकिन पर्यटन और तीर्थ के स्थानों तक आनन–फानन पहुंचाने की यह व्यवस्था अपने साथ एक विचित्र भीड़भाड़, भागमभाग, कुछ कम या ज्यादा गंदगी, थोड़ी–बहुत छीना–झपटी, चोरी–चपाटी, सब कुछ लाती हैं। चट्टी वाले दौर में देश के लोगों को हिमालय का अद्भुत सौंदर्य देखने को मिलता था। सड़क आने से यह दर्शन और भी सुलभ होना चाहिए था, पर सड़क से सिर्फ तीर्थयात्री ही नहीं आते, पूरा व्यापार आता है। उस व्यापार ने यहां के जंगलों का सौदा भी बड़ी फुर्ती से कर दिया है। अब हरिद्वार से बस में बैठा पर्यटक पूरा हिमालय पार कर ले – उसे कहने लायक सुंदर दृश्य, सुंदर जंगल कम ही दिखेंगे।

तुरत–फुरत पैसा कमाने की होड़ ने कई रास्ते बदल दिए हैं। पहले की यात्रा में तुंगनाथ और रुद्रनाथ शामिल थे। इनमें तुंगनाथ तो पूरे श्चार धामश के अनुभव में विशेष स्थान रखता था। उसके रास्ते में चोबता नाम की एक जगह के पास बनी चट्टियों में सचमुच श्अनुपम सौंदर्य आपकी प्रतीक्षा में खड़ा मिलता थाश इस पैदल सड़क को बनाने वाले पीडब्लूडी विभाग ने एक बोर्ड यहां ऐसा ही टांग दिया था।

ऐसे अनुभवों से बिलकुल अलग थीं, राजस्थान की भर्तृहरि और चाकसू तीर्थ क्षेत्रों की व्यवस्थाएं। अलवर और जयपुर जिलों में बने इन स्थानों की पूरी बसाहट कुछ अलग ढंग की है। यहां प्रवेश करते ही अनेक धर्मशालाएं दिखने लगेंगी जिनमें न दरवाजे हैं, न खिड़कियां। भवन छोटा हो या बड़ा, प्रवेशद्वार तक नहीं मिलेगा। यहां किसी भी धर्मशाला में बोर्ड नहीं, बनाने वाले का नाम नहीं, चौकीदार नहीं, दफ्तर या प्रबंधक नहीं। जहां मन करे, जगह मिल जाए, उसी कमरे में रुक जाएं। ऐसी व्यवस्था बहुत सोच–समझकर बनाई गई थी। तीर्थक्षेत्र में अपना नाम, अपना महत्व, अपना पैसा, अपना खानदान, स्वामित्व की भावना सब कुछ भुला दो। तीर्थयात्री के रहने का प्रबंध करो और श्रेय प्रभु अर्पण कर दो। एक पुराना किस्सा बताता है कि यहां किसी सेठ ने तीन मंजिल की एक सुंदर धर्मशाला बनाई थी। उनके मुंशी की गलती से उस नवनिर्मित भवन में, पहले ही दिन कुछ क्षणों के लिए श्यह मेरा हैश की गंध आई थी। तीर्थक्षेत्र में यह दुर्गंध तेजी से फैली और उसने तुंरत सेठ को आदेश दिया कि यह पूरी धर्मशाला, तीन मंजिला भवन तुम अपने हाथ से हथौड़ा मार–मारकर गिरा दो। सेठ ने खूब समझाया कि मिल्कियत का निशान तो अब मिटा दिया है, इतनी सुंदर इमारत भला क्यों तुड़वा रहे हो। न जाने कितने सालों तक कितने ही तीर्थयात्रियों के काम आएगी, पर निर्णय हो चुका था। पूरी धर्मशाला तोड़ दी गई। यह किस्सा शायद 500 बरस से यहां आने वाले हर तीर्थयात्री को याद है– एक आदर्श की तरह। ऐसी सख्ती तब नहीं दिखाई गई होती तो वह धर्मशाला यहां आने वालों को कानून तोड़ने का सरल रास्ता और तर्क सुझाती रहती। चाकसू की धर्मशाला अपने को मिटाकर एक आदर्श की तरह उपस्थित है, समाज के मन में। जीवन को भी एक यात्रा ही कहा गया है जो साफ–सुथरी, लिपी–पुती चट्टियों पर बीतेगी या नकली चमक–धमक वाले होटलों जैसे घरों में – इसे बहुत हद तक हम खुद तय कर सकते हैं।

कनाडा और ग्रीनलैंड को अमेरिका में शामिल करने की बात महज इच्छा नहीं

कनाडा की अर्थव्यवस्था संयुक्त राज्य अमेरिका पर अत्यधिक निर्भर है। औपनिवेशिक युग के बाद भी देशों पर जबरन कब्जा करना कोई नई बात नहीं है। अमेरिका, 1867 के ब्रिटिश उत्तरी अमेरिका अधिनियम के तहत इसके निर्माण के बाद से ही कनाडा के विशाल क्षेत्र को हड़पने में रुचि रखता है। कनाडा एक द्विधार्मिक देश है। कानूनी अवधारणाएं अंग्रेजी और फ्रेंच दोनों में व्यक्त की जाती हैं। ब्रिटिश सम्राट, किंग चार्ल्स – तृतीय, कनाडा के संवैधानिक प्रमुख हैं।

ऐसा लगता है कि अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की कनाडा और ग्रीनलैंड को अमेरिका में शामिल करने और मैक्सिको खाड़ी का नाम बदलने की बात महज उनकी सामान्य इच्छा नहीं है बल्कि इसके पीछे कोई राज की बात है। कनाडा पर अमेरिका का कब्जा तो ब्रिटिश सम्राट की भागीदारी वाली दोनों देशों के बीच एक संधि या कनाडा के नागरिकों द्वारा अमेरिका में शामिल होने के पक्ष में जनमत संग्रह या बल प्रयोग के माध्यम से ही संभव है।

कनाडा की अर्थव्यवस्था संयुक्त राज्य अमेरिका पर अत्यधिक निर्भर है। औपनिवेशिक युग के बाद भी देशों पर जबरन कब्जा करना कोई नई बात नहीं है। अमेरिका, 1867 के ब्रिटिश उत्तरी अमेरिका अधिनियम के तहत इसके निर्माण के बाद से ही कनाडा के विशाल क्षेत्र को हड़पने में रुचि रखता है। कनाडा एक द्विधार्मिक देश है। कानूनी अवधारणाएं अंग्रेजी और फ्रेंच दोनों में व्यक्त की जाती हैं। ब्रिटिश सम्राट, किंग चार्ल्स – तृतीय, कनाडा के संवैधानिक प्रमुख हैं। यद्यपि वह देश पर शासन नहीं करते हैं, ब्रिटिश राजा कनाडा की सरकार और पहचान का एक मूलभूत हिस्सा हैं।

हालांकि, अमेरिका ने अभी तक 9.98 मिलियन वर्ग किलोमीटर से अधिक के भौगोलिक क्षेत्र के हिसाब से दुनिया के दूसरे सबसे बड़े देश कनाडा पर कब्जा करने का गंभीर प्रयास नहीं किया है। कनाडा पर अमेरिका का कब्जा इसे रूस से आगे दुनिया का सबसे बड़ा देश बना देगा, जिसका कुल क्षेत्रफल 17,098,242 वर्ग किलोमीटर है। अमेरिका का क्षेत्रीय विस्तार कोई नई बात नहीं है। यह अमेरिकी संविधान द्वारा प्रदान किया गया है।

ट्रम्प इसे जानते हैं। ट्रम्प के सुझाव पर अमेरिका में कोई गंभीर राजनीतिक बहस नहीं है कि कनाडा को अपने में मिला लिया जाये और डेनमार्क के साथ संधि के माध्यम से ग्रीनलैंड को हासिल कर लिया जाये।

निरंतर क्षेत्रीय विस्तार और अधिग्रहण अमेरिका के भू–राजनीतिक इतिहास का एक हिस्सा है। विश्व इतिहासकार जानते हैं कि अमेरिका ने कैलिफोर्निया, नेवादा, यूटा, न्यू मैक्सिको, एरिजोना, कोलोराडो, ओक्लाहोमा, कंसास और व्योमिंग के वर्तमान राज्यों को कैसे अपने में मिला लिया। कनाडा और ग्रीनलैंड अगले निशाने हो सकते हैं। ऐसा करने के लिए अमेरिका में एक संवैधानिक वास्तुकला मौजूद है। अमेरिका के लिए अधिग्रहण या अधीनता के माध्यम से क्षेत्र हासिल करने की संभावना और मिसाल दोनों हैं। यहां तक कि कनाडा के जबरन विलय का किसी अन्य शक्ति द्वारा सैन्य रूप से विरोध किये जाने की संभावना बहुत कम है। अतीत में, अमेरिका, रूस, चीन, भारत, यूके, फ्रांस और इजरायल सहित कई सैन्य रूप से मजबूत देशों ने कई क्षेत्रों पर जबरन कब्जा किया या उन्हें अपने साथ बनाये रखा तथा इस क्रम में उन्हें किसी तीसरे पक्ष के बहुत कम विरोध का सामना करना पड़ा।

1950 में तिब्बत पर चीन का आक्रमण सभी विदेशी क्षेत्रीय विलयों में सबसे शांत था। तिब्बत पर चीनी सैन्य कब्जे की खबर, जिसे श्दुनिया की छतश के रूप में जाना जाता है, इतनी धीमी गति से फैली कि 1952 तक अधिकांश तिब्बती इसके बारे में अनभिज्ञ थे। चीन ने झिंजियांग, हैनान और झोउशान सहित कई क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया है। तिब्बत चीन के कुल भूभाग का लगभग आठवां हिस्सा है। तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र (टीएआर)झिंजियांग के बाद क्षेत्रफल के हिसाब से चीन का दूसरा सबसे बड़ा प्रांत–स्तरीय विभाजन है। गैर–अनुरूपतावादी कम्युनिस्ट चीन ने झिंजियांग के इस्लामिक राज्य और तिब्बत के बौद्ध क्षेत्र पर कब्जा कर लिया और रूस और कनाडा के बाद कुल भूमि क्षेत्र के हिसाब से दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा देश बन गया। चीन, जो और अधिक चाहता है, का भारत, जापान, वियतनाम, भूटान और फिलीपींस सहित कई देशों के साथ क्षेत्रीय विवाद है। यह ताइवान और दक्षिण चीन सागर के क्षेत्र पर दावा करता है। चीन अक्साई–चीन पर शासन करता है, जिसे भारतीय क्षेत्र माना जाता है। कोई यह कह सकता है कि भारत ने खुद ही हैदराबाद, गोवा, दमन और दीव और सिक्किम पर कब्जा कर लिया। ब्रिटिश शासन से अपनी स्वतंत्रता के समय भारत के भीतर सभी राज्य स्वतंत्र क्षेत्र थे। भारत ने 1961 में गोवा पर कब्जा करने के बाद उसे पुर्तगाली नियंत्रण से अलग कर लिया। इंडोनेशिया ने 1963 में पश्चिमी न्यू गिनी पर कब्जा कर लिया। उत्तरी वियतनाम ने अमेरिकी सशस्त्र बलों के साथ लंबे युद्ध के बाद दक्षिण वियतनाम पर कब्जा कर लिया। इजराइल ने 1967 में पश्चिमी गोलनहाइट्स पर कब्जा कर लिया। उत्तरी साइप्रस 1974 से तुर्की के कब्जे में है। ब्रिटेन द्वारा नियंत्रित 14 विदेशी क्षेत्रों में से ये हैरू एंगुइलाय बरमूडाय ब्रिटिश अंटार्कटिक क्षेत्र (बीएटी)य ब्रिटिश हिंद महासागर क्षेत्र (बीआईओटी)य ब्रिटिश वर्जिन द्वीपय केमैन द्वीपय फॉकलैंड द्वीपय जिब्राल्टरय मोंटसेराटय पिटकर्न, हेंडरसन, ड्यूसी और ओनो द्वीपय सेंट हेलेना, असेंशन और ट्रिस्टनदाकुन्हाय और दक्षिण जॉर्जिया। विदेशी फ्रांस में यूरोप के बाहर 13 विदेशी क्षेत्र शामिल हैं। रूस खार्किव और मायकोलाइव के डोनेट्स्क, खेरसॉन, लुहान्स्क और जापोरिज्जिया ओब्लास्ट के कुछ हिस्सों को नियंत्रित करता है। यूक्रेन कुर्स्क ओब्लास्ट के कुछ हिस्सों को नियंत्रित करता है।

इस प्रकार, ट्रम्प द्वारा कनाडा और ग्रीनलैंड को अधिग्रहित करने के विचार का खुलेआम प्रचार करना कोई नयी या असामान्य बात नहीं लगती। इससे पहले, कनाडा ब्रिटिश कब्जे में था। ग्रीनलैंड डेनमार्क साम्राज्य का एक स्वायत्त क्षेत्र है। कनाडा में अमेरिकी हित के विपरीत, अमेरिकी सरकार लंबे समय से ग्रीनलैंड को अपने अधीन करने की कोशिश कर रही है। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, अमेरिका ने सैन्य रूप से कब्जा करने के लिए अपने मोनरो सिद्धांत का इस्तेमाल किया था।

कुम्भ पर चन्द्रशेखर के वाजिब सवाल

सोमवार को पौष पूर्णिमा पर स्नान एवं कल्पवास की शुरुआत के साथ प्रयागराज में गंगा तट पर महाकुम्भ आरम्भ हो गया है जो 26 फरवरी को महाशिवरात्रि के दिन तक चलेगा सोमवार को पौष पूर्णिमा पर स्नान एवं कल्पवास की शुरुआत के साथ प्रयागराज में गंगा तट पर महाकुम्भ आरम्भ हो गया है जो 26 फरवरी को महाशिवरात्रि के दिन तक चलेगा। इंतजामात के लिहाज से इसे एक बड़ा आयोजन समझा जा रहा है कि क्योंकि पहली बार यह बेहद भव्य व विस्तृत परिसर में होगा। कहा जा रहा है कि इस दौरान इसमें 40 करोड़ लोगों के आने की उम्मीद है जबकि व्यवस्था 100 करोड़ श्रद्धालुओं के लायक हुई है।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ इस मेले को अपनी प्रशासकीय कुशलता का एक उदाहरण बनाने पर तुले हैं परन्तु वहीं आजाद समाज पार्टी के अध्यक्ष चन्द्रशेखर आजाद ने इसे लेकर कुछ बेहद वाजिब सवाल उठाये हैं जिन पर पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर विचार किया जाना चाहिये। श्एक्सश पर डाली एक पोस्ट में उन्होंने आयोजन के प्रबन्ध पर योगी आदित्यनाथ की तारीफ करते हुए कहा कि सरकार के पास बहुत शक्ति होती है। श्अगर वह चाहे तो कोई असम्भव काम भी सम्भव हो सकता है। केवल 6 माह में रेत पर पूरा शहर बसा देना इसका उदाहरण है। यह बतलाता है कि सरकार कोई भी चुनौती को स्वीकार कर ले तो किसी भी समस्या का समाधान किया जा सकता है।श आजाद ने सरकार की प्राथमिकता पर सवाल उठाते हुए कहा कि श्जब बात आती है देश के गरीब, किसान, मजदूर, पिछड़े, दलित, आदिवासी और महिलाओं के अधिकारों और सुरक्षा की, तो सवाल उठता है कि यदि इन आयोजनों को इतने बड़े पैमाने पर अंजाम दिया जा सकता है तो शिक्षा, चिकित्सा, महिलाओं की सुरक्षा, रोजगार और बच्चों के भविष्य के लिए क्यों नहीं इस तरह की इच्छाशक्ति दिखाई जा रही है?श रविवार को उन्होंने यह बयान दिया था जिसे लेकर हंगामा होना स्वाभाविक था। उन्होंने कहा कि श्जो लोग वहां अपने पाप धोने जायें वे कोरोना के वक्त उसी गंगा में बहा दी गयी लाशों को भी याद करें जिन्हें उपचार की सुविधा नहीं मिल पाई थी।श अपने बयान पर अडिग रहते हुए आजाद ने कहा कि श्जितना पैसा कुम्भ पर लगाया गया है उतना अगर देश के युवाओं की शिक्षा, चिकित्सा और रोजगार देने पर लगाते तो बहुत से परिवारों के आंसू सूख जाते। सोमवार को इसी बयान के सन्दर्भ में जब उनसे पूछा गया कि अगर उन्हें निमंत्रण मिला तो क्या वे कुम्भ जायेंगे, इस पर उन्होंने कहा कि श्उन्होंने कोई पाप नहीं किया है इसलिये उन्हें जाने की जरूरत नहीं है। न मैंने पाप किये हैं और न ही मैं वहां धोने जा रहा हूं।श जाहिर है कि इसकी प्रतिक्रिया होती और वैसा ही हो रहा है। विभिन्न धर्मगुरु और नेता उन्हें कोस रहे हैं। उन्होंने इसे और स्पष्ट करते हुए कहा कि हमने बचपन से सुन रखा है कि गंगा में नहाने से पाप धुलते हैं। इस पर शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद ने कहा कि श्क्या कभी चन्द्रशेखर कुम्भ में आये हैं? यदि आयें तो वे ऐसे निष्पापी व्यक्ति के दर्शन करना चाहेंगे।श पीठाधीश्वर रामविलास दास वेदान्ती तो चन्द्रशेखर पर इस कदर नाराज हुए हैं कि उन्होंने यहां तक कह डाला कि महाकुम्भ में केवल पुण्यात्मा जाते हैं, पापी नहीं। अपने बयान पर डटे हुए चन्द्रशेखर ने इस मामले में धार्मिक लोगों की दखलंदाजी पर आपत्ति करते हुए याद दिलाया कि जब भारत को विश्व कप दिलाने के लिये लोग हवन करते हैं तो उन्हें इसलिये हंसी आती थी क्योंकि वे विज्ञानवादी है। वे कहना चाहते हैं कि झांसी के अस्पताल में आग से बच्चों का मरना बतलाता है कि सरकार की प्राथमिकताएं दूसरी हैं। सरकार गम्भीर नहीं है और सरकार से जनकल्याण को लेकर सवाल करना गलत नहीं है। यदि समाज के वंचित तबकों के उत्थान के लिये भी उसी संकल्प एवं दृढ़ इच्छाशक्ति से काम किया जाये तो बदलाव सम्भव है।

देखा जाये तो चन्द्रशेखर ने जो भी बातें कहीं हैं उनमें कोई भी बात बेजा नहीं है। उनके द्वारा उठाये गये सवाल भी वाजिब हैं क्योंकि महाकुम्भ में जहां एक ओर भारी–भरकम राशि खर्च हो रही है वहीं दूसरी ओर सरकार का पिछला कुछ वक्त इसी काम में गुजरा है जबकि प्रदेश में रोजगार जैसा मुद्दा पहले समाधान मांगता है। शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों की ओर मानों सरकार का ध्यान ही नहीं है। बेशक सरकार कुम्भ की व्यवस्था पर भी ध्यान दे क्योंकि उससे लोगों की आस्था जुड़ी है तथा करोड़ों लोग यहां गंगा स्नान के लिये आयेंगे जिनकी सुविधा तथा सुरक्षा पर ध्यान दिया जाना चाहिये, फिर भी इस मौके पर अनेक ऐसे सवाल हैं जो अपने आप उठ खड़े होते हैं। मसलन, कुम्भ का बजट करीब 5500 करोड़ रुपये का बताया जाता है। इस बात का अनुमान लगाया जा सकता है कि इतनी राशि में कितने अस्पताल, स्कूल आदि खोले जा सकते हैं। देश में कुम्भ की परम्परा सैकड़ों वर्षों से चली आ रही है और ऐसा नहीं कि भारतीय जनता पार्टी ही इसकी पहली आयोजक है तथा आदित्यनाथ प्रवर्तक।

कांग्रेस-आप की जंग में इंडिया को नुकसान

ऐसे समय में जब प्रमुख विपक्षी गठबन्धन श्इंडियाश को मजबूत करने के लिये उसका नेतृत्व कर रहे कांग्रेस पर दबाव है, दिल्ली विधानसभा चुनाव में उसके और सत्तारुढ़ आम आदमी पार्टी के बीच जंग इतनी तेज हो गयी है कि शक है कि गठबन्धन में आप रहेगी या नहीं। चुनाव प्रचार के दौरान एक–दूसरे को नीचा दिखाने पर आमादा कांग्रेस व आप के बीच जो घट रहा है, उससे गठबन्धन की एकजुटता और भविष्य पर भी सवालिया निशान लग रहे हैं। सम्भव है कि इसके बाद आप इंडिया से कांग्रेस को निकालने या उसके हाथों से नेतृत्व छीनने की मुहिम छेड़ दे या स्वयं अलग हो जाये। आप के ताल्लुकात कांग्रेस से हाल के दिनों में काफी बिगड़े हैं। देखना होगा कि यह अदावत क्या गुल खिलाती है। आप का व्यवहार वैसे भी इस मायने में संदिग्ध रहा है कि उसके सभी सियासी कदमों का लाभ केन्द्र की सत्ता में बैठी भारतीय जनता पार्टी को मिलता रहा है। विस्तार की महत्वाकांक्षा के चलते पूर्व मुख्यमंत्री एवं पार्टी अध्यक्ष अरविंद केजरीवाल ने अनेक राज्यों के विधानसभा चुनावों में उम्मीदवार उतारने का सिलसिला बनाये रखा था। जहां तक इंडिया गठबन्धन का हिस्सा बनने के पहले की बात थी, तब तक तो ठीक था क्योंकि यह हर पार्टी का अधिकार है कि वह चाहे जहां से अपने प्रत्याशी उतारे व कहीं से चुनाव लड़े। देश का शायद ही कोई ऐसा महत्वपूर्ण राज्य होगा जहां से उसने पिछले दस वर्षों में अपने उम्मीदवार खड़े न किये हों। यह तो सही है कि इसके चलते उसने दिल्ली के बाहर पंजाब में अपनी सरकार बनाई है तथा उसे इसका श्रेय जाता है कि कांग्रेस व भाजपा के अतिरिक्त वही ऐसा दल है जिसकी दो राज्यों में सरकारें हैं। जहां तक इंडिया गठबन्धन में शामिल होने के बाद की बात है, दिल्ली विधानसभा चुनाव का ऐलान होते ही उसने तत्काल अपने उम्मीदवारों की घोषणा कर दी– सहयोगी दलों से बात किये या तालमेल की गुंजाइशों पर विचार किये बगैर ही।

फौजी को जमीन दिलाने के नाम पर 6 लाख रुपये की जालसाजी, केस दर्ज

गोरखपुर। गोरखपुर में साइबर अपराध के मामले बढ़ गए हैं। जालसाजों ने परिवार के लिए घर बनवाने के लिए जमीन की तलाश कर रहे फौजी को ठग लिया।शहर में जमीन दिलाने के नाम पर फौजी से छह लाख रुपये की जालसाजी का मामला सामने आया है। पीपीगंज पुलिस फौजी की तहरीर पर एम्स क्षेत्र के कूड़ाघाट निवासी कृष्ण मुरारी उपाध्याय पर केस दर्ज कर जांच कर रही है। डाढ़ाडीह निवासी आर्मी जवान रामकिशुन यादव शहर में आवासीय जमीन की तलाश कर रहे थे। इसी दौरान कूड़ाघाट निवासी कृष्ण मुरारी उपाध्याय ने पादरी बाजार के पास अपने रिश्तेदार की जमीन बता कर छह लाख एडवांस बैंक खाते में ले लिए। इसके बाद जमीन की रजिस्ट्री नहीं कराई। रुपये वापस मांगने पर धमकी देने लगा। एसएसपी के निर्देश पर पीपीगंज पुलिस ने केस दर्ज किया।

गोरखपुर एमएमएमयूटी

शिक्षा मंत्री आशीष पटेल बोले- शोध की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए कराएं औद्योगिक भ्रमण

गोरखपुर। कैबिनेट मंत्री आशीष पटेल ने विश्वविद्यालय की नैक ग्रेडिंग, एनआईआरएफ रैंकिंग और बीबीए प्रोग्राम में बेहतरीन प्रदर्शन के लिए कुलपति एवं समस्त अधिकारियों की प्रशंसा की। बैठक के बाद उन्होंने बहुउद्देशीय भवन में 500 से भी अधिक छात्र–छात्राओं से सीधा संवाद कर उनकी परेशानियों को सुना। उन्होंने एक छात्रा से छात्रावास की व्यवस्थाओं के बारे में जानकारी ली। छात्राओं की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए आत्मरक्षा प्रशिक्षण की अपेक्षा जताई गई।

प्राविधिक शिक्षा मंत्री आशीष पटेल ने सोमवार को मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय का भ्रमण किया। उन्होंने कुलपति, सभी अधिष्ठाता और विभागाध्यक्षों संग बैठक कर शैक्षणिक गतिविधियों के बारे में जानकारी ली। कहा कि लैब्स और रिसर्च सेंटर की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के लिए औद्योगिक भ्रमण, आधुनिक सुविधाओं और व्यावहारिक प्रशिक्षण को प्राथमिकता दी जाए। उन्होंने विश्वविद्यालय की नैक ग्रेडिंग, एनआईआरएफ रैंकिंग और बीबीए प्रोग्राम में बेहतरीन प्रदर्शन के लिए कुलपति एवं समस्त अधिकारियों की प्रशंसा की। बैठक के बाद उन्होंने बहुउद्देशीय भवन में 500 से भी अधिक छात्र–छात्राओं से सीधा संवाद कर उनकी परेशानियों को सुना। उन्होंने एक छात्रा से छात्रावास की व्यवस्थाओं के बारे में जानकारी ली। छात्राओं की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए आत्मरक्षा प्रशिक्षण की अपेक्षा जताई गई। उन्होंने जनपदीय अभियांत्रिकी विभाग के छात्रों को अरुणाचल प्रदेश में नवनिर्मित डैम और चिनाब ब्रिज के दौरे पर ले जाने वादा किया। मंत्री ने विश्वविद्यालय में खेल एवं अन्य सुविधाओं की जानकारी ली। छात्रों ने जिम बंद होने की जानकारी दी जिसपर उन्होंने इंडोर जिम का 11 लाख रुपये की लागत से आधुनिकीकरण कार्य और भवन में सिविल कार्य होने के कारण यह कुछ समय से बंद था। अब कार्य पूर्ण हो चुका है और 26 जनवरी से जिम छात्रों के लिए खोल दिया जाएगा। इसके अतिरिक्त आठ लाख से दो ओपन जिम बनाए जा रहे हैं, जिनके उपकरण खरीद लिए गए हैं और स्थापना का कार्य प्रगति पर है। वहीं, दो और ओपन जिम महिला छात्रावासों के लिए प्रस्तावित हैं।

गोरखनाथ खिचड़ी मेला- भारी भीड़ के बीच दर्शन की हसरत हुई पूरी, श्रद्धालुओं ने कहा- अगले बरस फिर आएंगे

गोरखनाथ मंदिर में खिचड़ी चढ़ाने उमड़ा जनसैलाब

लाखों श्रद्धालुओं ने गोरखनाथ खिचड़ी मेले में बाबा गोरखनाथ के दर्शन किए और अपनी हसरत पूरी की। श्रद्धालुओं ने अगले बरस फिर से दर्शन करने की मनौती उठाई। आस्था में डूबे श्रद्धालुओं को न तो भूख लगी और न ही प्यास का अहसास हुआ। गोरखनाथ मंदिर जाने वाले हर रास्ते पर सुबह से शाम तक श्रद्धालुओं का रेला लगा रहा। हेलिकॉप्टर से फूलों की पुष्पवर्षा की गई।

गोरखपुर। गोरखनाथ मंदिर की ओर जाने वाले हर रास्ते पर श्रद्धालुओं का रेला। बड़े, बुजुर्ग, युवा, महिलाएं और बच्चे बस एक ही धुन में, किसी तरह से गुरु गोरक्षनाथ बाबा के दर्शन हो जाए। आस्था की खिचड़ी चढ़ाकर आस पूरी कर लें। मंगलवार को मकर संक्रांति पर उमड़ी भीड़ में शामिल लाखों लोगों ने बाबा के दर्शन कर अपनी हसरत पूरी की। तमाम लोगों ने अगले बरस फिर से दर्शन करने की मनौती उठाकर गंतव्य के लिए रवाना हुए। मंदिर की ओर से धर्मशाला आने वाले रास्ते पर नागपुर के सावली तहसील की रहने वाली संध्या महाजन, निर्मला और छाया ट्राली बैग खींचती हुईं तेज कदमों से रेलवे स्टेशन की ओर बढ़ते हुए गोरखनाथ बाबा के जयकारें लगाती रहीं।

आस्था का सैलाबः मकर संक्रांति के अवसर पर बाबा गोरखनाथ को खिचड़ी चढ़ाने के लिए मंगलवार को जन सैलाब आस्था की खिचड़ी के साथ पहुंचा। मंदिर के उत्तरी गेट पर उमड़ी भीड़। अभिनव राजन चतुर्वेदी

संध्या ने कहा कि आठ लोगों का जत्था मंगलवार की सुबह ट्रेन से गोरखपुर रेलवे स्टेशन पहुंचा। विलंब होने से पैदल ही सामान लेकर गोरखनाथ मंदिर दर्शन करने गए। लंबी लाइन और भीड़ में मशक्कत करने के बाद गोरखनाथ बाबा को प्रणाम करके प्रयागराज रवाना हो रहे हैं। यहां रुक जाते तो विलंब हो जाता, क्योंकि दो दिनों के बाद ही नागपुर की ट्रेन है।

दोपहर दो बजे गोरखनाथ ओवरब्रिज पर सिद्धार्थनगर जिले के अहिरौली रेलवे स्टेशन के समीप रहने वाले रामबेलास, परिवार के सदस्यों और गांव की बुजुर्ग महिलाओं संग कुल 14 लोगों की अगुवाई करते हुए तेज कदमों से मंदिर की ओर चले जा रहे थे। रामबेलास ने कहा कि गांव से सामान बांधकर पहले वाराणसी गए। वहां से प्रयागराज जाकर स्नान किया। इसके बाद गोरखपुर आए हैं। बाबा गोरखनाथ के दर्शन करके अयोध्या चले जाएंगे। अकेले वही नहीं, महराजगंज के केदार, कुशीनगर के खड्डा से आए करुणेश सहित अन्य लोग बाबा को खिचड़ी चढ़ाने को बेताब नजर आए।

आस्था में हर कोई डूबा, भूख लगी न प्यास

गोरखनाथ मंदिर जाने वाले हर रास्ते पर सुबह से शाम तक श्रद्धालुओं का रेला लगा रहा। कोई परिवार संग तो कोई गांव मोहल्ले के लोगों संग गोरखनाथ बाबा का दर्शन करने पहुंचा। धर्मशाला रोड पर यात्री वाहनों के संचालन की मनाही होने पर लोगों को पैदल ही गोरखनाथ मंदिर आना जाना पड़ा। बच्चे हों या बुजुर्ग, हर कोई आस्था में डूबा रहा, किसी को न तो भूख लगी, न ही प्यास का अहसास हुआ। हालांकि धर्मशाला से गोरखनाथ ओवरब्रिज तक विभिन्न संगठनों की ओर से खिचड़ी प्रसाद के वितरण होता रहा, जिसमें शामिल होकर श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया।

खिचड़ी मेले में श्रद्धालुओं पर हेलिकॉप्टर से हुई पुष्पवर्षा

मकर संक्रांति के पावन पर्व पर गोरखनाथ मंदिर में आयोजित विश्व प्रसिद्ध खिचड़ी मेले में आए लाखों श्रद्धालु प्रदेश सरकार की ओर से किए गए अभिवादन से अभिभूत हो गए। मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ के निर्देश पर खिचड़ी मेले में आए श्रद्धालुओं पर हेलिकॉप्टर से पुष्पवर्षा की गई। इस अभूतपूर्व स्वागत से हर्षित श्रद्धालुओं ने गुरु गोरक्षनाथ के खूब जयकारे लगाए और मुख्यमंत्री के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित की। गोरखनाथ मंदिर का खिचड़ी मेला श्रद्धालुओं की संख्या के मामले में अभूतपूर्व रहा तो उनका स्वागत भी दिल जीतने वाला रहा। आसमान से अपने स्वागत में फूल गिरते देख श्रद्धालु भाव विभोर हो गए। पुष्पवर्षा के साथ पहले से गुंजित गुरु गोरक्षनाथ के जयकारे की गति तेज और ध्वनि गगनभेदी हो गई। श्रद्धालुओं ने कहा कि मुख्यमंत्री की यह पहल हृदय को स्पंदित करने वाली है।

गुलरिहा बाल सुधार गृह से भागा बाल अपचारी, पहले भी तीन भागे थे

गोरखपुर। गोरखपुर के बाल सुधार गृह से एक बार फिर से बाल अपचारी कूदकर फरार हो गया है। गोरखपुर के गुलरिहा स्थित बाल सुधार गृह से पीपीगंज निवासी बाल अपचारी फरार हो गया। बताया जा रहा है कि सुबह 9 बजे करीब सुधार गृह की दीवार कूदकर फरार हो गया। पीपीगंज में लड़की भगाने के आरोप में पकड़ा गया था बाल अपचारी। इसके पहले भी तीन बाल अपचारी सुधार गृह से भाग गए थे। काफी मशक्कत के बाद इन्हें वापस पकड़ा गया था। इस दौरान स्थानीय लोगों ने आरोप लगाया था कि बाल सुधार गृह के बाल अपचारी खिड़की और छत पर खड़े होकर गंदे गंदे गाने गाते हैं।

पशु तस्करों ने पिकअप से राहगीर को रौंदा पुलिस मुठभेड़ में तीन को लगी गोली

बस्ती। एसपी अभिनंदन ने बताया कि बुधवार रात सूचना मिली कि एक पिकअप पर गोंडा से गोवंशीय पशु लाद कर हाईवे होते हुए बिहार की ओर जा रहे हैं। गौर पुलिस ने पिकअप का पीछा किया तो तस्कर वाल्टरगंज क्षेत्र से होते हुए पुरानी बस्ती क्षेत्र के पाण्डेय बाजार की ओर भागे। पुलिस से बचने के चक्कर में पशु तस्करों ने बस्ती के पाण्डेय बाजार में एक राहगीर को अपने वाहन से रौंद दिया। बाद में पुलिस ने पुरानी बस्ती क्षेत्र के सबदेइया कला गांव में भाग रहे तस्करों की घेराबंदी की, जहां मुठभेड़ में तीन तस्करों को गिरफ्तार कर लिया गया। तीनों के पैर में गोली लगी है। पकड़े गए तस्कर रामपुर, संतकबीरनगर व कुशीनगर के रहने वाले हैं। वहीं, मृतक की पहचान नहीं हो पाई है।

एसपी अभिनंदन ने बताया कि बुधवार रात सूचना मिली कि एक पिकअप पर गोंडा से गोवंशीय पशु लाद कर हाईवे होते हुए बिहार की ओर जा रहे हैं। गौर पुलिस ने पिकअप का पीछा किया तो तस्कर वाल्टरगंज क्षेत्र से होते हुए पुरानी बस्ती क्षेत्र के पाण्डेय बाजार की ओर भागे। वे रेलवे लाइन पार करके शहर के अंदर आना चाहते थे, लेकिन रेलवे फाटक बंद था। वापस होने के लिए वे तेजी से गाड़ी मोड़ने लगे। इस दौरान एक अज्ञात व्यक्ति चपेट में आ गया। पुलिस ने उसे जिला अस्पताल पहुंचाया, जहां उसे मृत घोषित कर दिया गया। उधर, पुलिस पीछे लगी रही तो फोरलेन पर सबदेईया कला के पास घिरने के बाद तस्करों ने पुलिस टीम पर फायर कर दिया। गोली पुरानी बस्ती के एसओ महेश सिंह व वाल्टरगंज के एसओ उमाशंकर तिवारी के बुलेट प्रूफ जैकेट पर लगी। पुलिस की जवाबी कार्रवाई में रामपुर जिले के बंगला आजादपुर निवासी असीम और संतकबीरनगर जिले के मोहम्मदपुर कटहर निवासी राजेश निषाद और कुशीनगर के पटेहरवा के अब्दुल रहीम के पैरों में गोली लगी। इनके कब्जे से छह पशुओं से लदा एक पिकअप और दो तमंचे भी बरामद किए गए। सभी के खिलाफ गोवध निवारण अधिनियम, पशु क्रुरता अधिनियम व शस्त्र अधिनियम के तहत केस दर्ज किया है।

हुक्का–बार में दरिंदगी

किशोरी को बंधक बना तीन लोगों ने किया दुष्कर्म, 31 दिसंबर से थी लापता, आपबीती सुन सब दंग

गोरखपुर। किशोरी से पूछताछ के बाद पता चला कि गीता वाटिका के सामने स्थित हुक्का बार में उसे लेकर गए थे। वहां पर अनिरुद्ध ओझा ने अपने दो साथियों के साथ मिलकर सामूहिक दुष्कर्म किया। गोरखपुर के रामगढ़ताल क्षेत्र में किराये के मकान में रहने वाली किशोरी को हुक्का बार में बंधक बनाकर सामूहिक दुष्कर्म करने का मामला सामने आया है। पुलिस ने हुक्का बार व होटल फ्लाई इन के संचालक अनिरुद्ध ओझा, उसके दोस्त निखिल गौड़ और आदित्य मौर्या को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपियों पर पुलिस ने अपहरण का केस दर्ज किया था, पकड़े जाने पर सामूहिक दुष्कर्म व पॉक्सो की धारा बढ़ाते हुए जेल भिजवा दिया।

जानकारी के मुताबिक, बांसगांव इलाके की रहने वाली महिला अपने 12 वर्षीय बेटी को लेकर किराये के मकान में रामगढ़ताल इलाके में रहती हैं। बेटी स्कूल आती जाती थी। 31 दिसंबर की शाम चार बजे के करीब उसकी दो सहेलियां स्कूटी से आईं और फिर साथ लेकर चली गईं। इसके बाद किशोरी का कोई पता नहीं चला। देर रात तक वापस नहीं आने पर परेशान मां ने सहेलियों से पता किया, लेकिन वह कुछ भी जानकारी नहीं दे पा रही थी। इसके बाद महिला रामगढ़ताल थाने पहुंच गई। किशोरी के लापता होने के मामले में पुलिस ने अपहरण का केस दर्ज कर लिया। मामले की छानबीन शुरू की गई और किशोरी को पुलिस ने ढूंढ निकाला।

किशोरी से पूछताछ के बाद पता चला कि गीता वाटिका के सामने स्थित हुक्का बार में उसे लेकर गए थे। वहां पर अनिरुद्ध ओझा ने अपने दो साथियों के साथ मिलकर सामूहिक दुष्कर्म किया। इसके बाद पुलिस ने किशोरी का मेडिकल कराने के साथ ही आरोपियों को गिरफ्तार कर ली है। पकड़ा गया मुख्य आरोपी अनिरुद्ध ओझा झंगहा के जोलहाबारी गांव के मूल निवासी रविंद्र ओझा का बेटा है। जबकि, निखिल गौर देवरिया के तरकुलहा थाना क्षेत्र के जनहता गांव का निवासी है और वर्तमान में मोहद्दीपुर में रहता है। आदित्य शाहपुर का रहने वाला है।

मायावती ने कहा– बसपा ही भाजपा का विकल्प

इंडिया गठबंधन का देश और प्रदेश में नहीं है कोई भविष्य

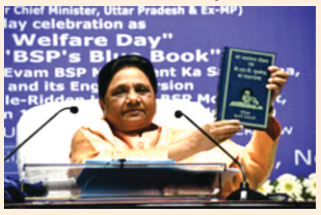

लखनऊ। अपने जन्मदिन के मौके पर मायावती ने लखनऊ में पत्रकार वार्ता की। इस मौके पर उन्होंने अपने द्वारा लिखी गई एक किताब का भी विमोचन किया। बसपा सुप्रीमों मायावती बुधवार से 69 साल की हो गईं। इस मौके पर उन्होंने लखनऊ के पार्टी कार्यालय में पत्रकारों से बात की। मायावती ने यहां आंबेडकर के नाम पर हो रही राजनीति पर प्रश्न उठाया। मायावती ने कहा कि उनके वोटरों को बाकी दलों से सावधान रहना होगा। उनके वोटर लोक लुभावन बातों पर वोट दे देते हैं। उनको इससे बचना चाहिए। वोटरों को देखना चाहिए कि किस पार्टी ने जमीनी स्तर पर उनके जीवन को बदलने का काम किया है।

इंडिया गठबंधन का नहीं है भविष्य

बसपा सुप्रीमों ने दो टूक लहजे में कहा कि भाजपा के विकल्प के रूप में बसपा एकलौती पार्टी है। इंडिया गठबंधन का यूपी सहित पूरे प्रदेश में कोई भविष्य नहीं है। यह सभी पार्टियां स्वार्थ के लिए एकत्रित हुई है जनता के लिए नहीं।

दिल्ली के चुनावों में उम्मीद

मायावती ने कहा कि दिल्ली के चुनाव में पार्टी शानदार प्रदर्शन करेगी। यदि चुनाव पूरी तरह से निष्पक्ष हुए तो यकीन मानिए कि परिणाम चौंकाने वाले होंगे।

किताब का विमोचन

इस मोके पर मायावती ने अपने द्वारा लिखी गई किताब का विमोचन किया। इस किताब में उनकी और बसपा की यात्रा की कहानी कही गई है।

प्रदेश में बिगड़ा मौसम कहीं कोहरा तो कहीं बारिश का प्रकोप

लखनऊ। मकर संक्रांति के अगले दिन पूरा प्रदेश कोहरे और बारिश की चपेट में है। आज कई जिलों में वज्रपात का भी अलर्ट जारी किया गया है। मकर संक्रांति के अगले दिन पूरे प्रदेश का मौसम एक बार फिर से बिगड़ गया है। कुछ जिलों में बुधवार की सुबह घना कोहरा देखा गया तो कहीं पर हल्की बारिश से सुबह शुरू हुई। नए विकसित हो रहे पश्चिमी विक्षोभ की वजह से मौसम में फिर बदलाव देखने को मिला। बुधवार के लिए मौसम विभाग ने बुंदेलखंड व आगरा क्षेत्र के 16 जिलों में गरज चमक संग वज्रपात और 18 जिलों में घने कोहरे का ऑरेंज अलर्ट जारी किया है।

यहां वज्रपात की चेतावनी

बुलंदशहर, अलीगढ, मथुरा, हाथरस, कासगंज, एटा, आगरा, फिरोजाबाद, मैनपुरी, इटावा, औरैया, बदायूं , जालौन, हमीरपुर, महोबा, झांसी, ललितपुर व आसपास के इलाकों में।

यहां घने कोहरे का आरेंज अलर्ट

देवरिया, गोरखपुर, संतकबीरनगर, बस्ती, कुशीनगर, महाराजगंज, सिद्धार्थनगर, गोंडा, बलरामपुर, श्रावस्ती, बहराइच, लखीमपुर खीरी, बिजनौर, अमरोहा, मुरादाबाद, रामपुर, बरेली, पीलीभीत व आसपास के इलाकों में।

यहां भी कोहरा छाने की संभावना

बांदा, चित्रकूट, कौशांबी, प्रयागराज, फतेहपुर, प्रतापगढ़, सोनभद्र, मिर्जापुर, चंदौली, वाराणसी, भदोही, जौनपुर, गाजीपुर, आजमगढ़, मऊ, बलिया, सीतापुर, हरदोई, फरुखाबाद, कन्नौज, कानपुर देहात, कानपुर नगर, उन्नाव, लखनऊ, बाराबंकी, रायबरेली, अमेठी, सुल्तानपुर, अयोध्या, अंबेडकरनगर, सहारनपुर, शामली, मुजफ्फरनगर, बागपत, मेरठ, गाजियाबाद, हापुड, गौतमबुद्ध नगर, बुलंदशहर, शाहजहांपुर, संभल, बदायूं एवं आसपास के इलाकों में।

भाजपा ने साधे दलित समीकरण

धार्मिक एजेंडे के बजा, जाति पर सिमटता दिखेगा ये चुनाव

लखनऊ। लोकसभा चुनाव में अयोध्या सीट हारने के बाद से ही भाजपा सपा सांसद चुने गए अवेधश प्रसाद की सीट पर कब्जा करने के लिए पासी समाज के ही एक ऐसे चेहरे की तलाश में थी, जो मजबूत टक्कर दे सके। भाजपा ने पासी समाज के चंद्रभानु पासवान को मैदान में उतारकर सपा को घेरने की कोशिश की है। जातीय समीकरण साधने के साथ ही भाजपा ने चंद्रभान के जरिए सपा सांसद अवधेश प्रसाद के उस नारे का जवाब देने की कोशिश की है, जो सपा उम्मीदवार के तौर पर अवधेश प्रसाद ने अयोध्या सीट पर लोकसभा चुनाव के दौरान दिया था। उन्होंने प्रचार के दौरान श्अयोध्या न काशी, अबकी बार चलेगा पासी श का नारा दिया था। माना जा रहा है कि भाजपा ने अवधेश के इसी नारे के जवाब में अबकी बार पासी की काट के लिए पासी पर ही दांव लगाकर सपा को घेरने की कोशिश की है। दरअसल लोकसभा चुनाव में अयोध्या सीट हारने के बाद से ही भाजपा सपा सांसद चुने गए अवेधश प्रसाद की सीट पर कब्जा करने के लिए पासी समाज के ही एक ऐसे चेहरे की तलाश में थी, जो मजबूत टक्कर दे सके। इसके लिए पार्टी की ओर से कराए गए सर्वे में चंद्रभानु का नाम मजबूती सामने आया था। इसलिए भाजपा ने विपक्ष के पासी उम्मीदवार के सामने पासी समाज के चंद्रभानु को टिकट देने का फैसला किया है। माना जा रहा है कि लोकसभा चुनाव परिणाम को देखते हुए भाजपा भी यह समझ चुकी थी कि इस बार उपचुनाव में अयोध्या, काशी व मथुरा जैसे धार्मिक एजेंडा के बजाए सपा के नारे को ही हथियार बनाकर मुकाबला में उतरना फायदेमंद होगा। इसलिए लिहाज से ही भाजपा ने भी पासी की काट के लिए पासी समाज से ही उम्मीदवार देने का फैसला लिया है।

मिल्कीपुर उपचुनाव का नया नारा

अयोध्या न काशी, पासी की काट पासी

कुल मतदाता 3.5 लाख

- 55 हजार पासी,
- 1.2 लाख अन्य दलित (कोरी आदि),
- 55 हजार यादव,
- 60 हजार ब्राम्हण,
- 30 हजार मुस्लिम,
- 25 हजार क्षत्रिय,
- 50 हजार अन्य पिछड़ी जाति

मिल्कीपुर सीट पर दलित मतादाता ही निर्णायक भूमिका निभाते रहे हैं। उसमें भी पासी समाज की संख्या सबसे अधिक है। यही वजह है कि पिछले कई चुनावों से सपा ने पासी समाज के ही पुराने और वरिष्ठ अवधेश प्रसाद पर दांव लगाकर सफल होती रही है। चुनावी इतिहास के आंकड़ों पर नजर डालें तो 1991 से अब तक के सभी चुनावों में इसी सीट पर भाजपा को सिर्फ दो ही बार जीत मिली है। यानि सियासी तौर पर इस सीट को सपा ही गढ़ माना जाता है। सूत्रों की माने तो भाजपा ने इस बार रणनीति बदलते हुए एक ऐसे प्रत्याशी की तलाश में जुटा था, जिसकी छवि निर्विवाद हो और बुजुर्ग सपा नेता अवधेश प्रसाद के मुकाबले दलित समाज के युवा वर्ग में अच्छा प्रभाव छोड़ सके।

दलित युवाओं को साधने की कोशिश

यह भी माना जा रहा है कि पुराने नेताओं के बजाए भाजपा ने एक युवा को मैदान में उतारकर दलित समाज के युवा वर्ग को साधने की भी कोशिश की है। चूंकि लोकसभा चुनाव से ही भाजपा सपा सांसद अवधेश प्रसाद की उम्र को लेकर सियासी तीर चलाती रही है। इसलिए भाजपा ने अपने उम्रदराज नेताओं की दावेदारी को किनारे करके चंद्रभानु को तरजीह दी है। कहा जा रहा है कि चंद्रभानु का युवा वर्ग पर अच्छा प्रभाव है और लगातार वह दो साल से युवाओं के बीच काम भी कर रहे हैं। इसलिए उपचुनाव में दलित युवाओं को साधने में मदद मिलेगी।

पर चुनौती भी कम नहीं

अयोध्या के चौतरफा विकास के बाद भी लोकसभा सीट हारने से भाजपा के लिए अहम बनी इस सीट को जीतने में भाजपा को कई चुनौतियों का भी सामना करना पड़ेगा। माना जा रहा है कि इस चुनाव में भी भाजपा को जहां संविधान बदलने और आरक्षण खत्म करने जैसे विपक्षी तुक्का पर स्थिति साफ करनी होगी। वहीं, टिकट न मिलने से नाराज अपने ही लोगों के भितरघात से निजात पाना बड़ी चुनौती होगी। हालांकि प्रमुख दावेदारों में शामिल रहे पूर्व विधायक गोरखनाथ बाबा ने पार्टी के फैसले का समर्थन तो किया है, लेकिन यह भी कहा है कि प्रभु श्रीराम भी राजगद्दी गंवाने के बाद जब वन की तरफ जा रहे थे, तब मुस्करा रहे थे। हम भी उन्हीं की दिखाई राह पर चलेंगे। उनके इस बयान के भी निहितार्थ निकाले जा रहे हैं।

ऐन वक्त पर बदला फैसला

सूत्रों की माने तो टिकट जारी होने के एक दिन पहले तक चुनाव लड़ने के लिए सरकारी सेवा से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेने का आवेदन करने वाले सुरेंद्र रावत की दावेदारी सबसे ऊपर थी, लेकिन उच्च स्तर से आए एक फोन से सुरेंद्र की सारी कवायद पर पानी फेर दिया। सुरेंद्र को टिकट दिलाने के लिए कई दिग्गज नेता जुटे थे। हालांकि माना जा रहा है कि टिकट से वंचित सुरेंद्र को पार्टी में कोई महत्वपूर्ण पद देकर समायोजित किया जाएगा।

थाईलैंड से देर रात लखनऊ आया डाक्टर की पत्नी का शव

लखनऊ के एक डाक्टर की पत्नी का शव होटल के बाथटब में मिला था। इस मामले में डाक्टर ही मुख्य आरोपी है। कल मृतक का शव विमान के माध्यम से लखनऊ एयरपोर्ट पहुंचा।

बेटे की मसाज के दौरान का एक वीडियो भी है। इस 36 सेकेंड के वीडियो में प्रियंका बोलती है- 'सच्चा प्यार करने वालों की कद्र नहीं होती'। हालांकि इस वीडियो में वह नहीं दिख रही है। वीडियो को लेकर पिता सत्यनारायण का कहना है- इसे आशीष ने मौत के 7 घंटे पहले भेजा था।

सत्यनारायण,
प्रियंका के पिता

प्रियंका के थाईलैंड जाने से मौत तक की टाइमलाइन

- आशीष श्रीवास्तव वृंदावन स्थित एलडी-को सौभाग्य में रहते हैं। ऑर्थो के डॉक्टर के हैं।
- 4 जनवरी को पत्नी प्रियंका शर्मा के साथ थाईलैंड घूमने गए।
- 7 जनवरी को प्रियंका की होटल के बाथटब में डूबने से मौत हो गई।
- 8 जनवरी की सुबह आशीष ने ससुर को घटना की जानकारी दी।
- वीडियो कॉल से वहां की परिस्थिति को दिखाया।
- 11 जनवरी को आशीष बेटे के साथ थाईलैंड से लखनऊ वापस आ गए।
- प्रियंका के पिता सत्यनारायण शर्मा ने हत्या की आशंका जताई।
- उन्होंने पीजीआई थाने में दामाद के खिलाफ तहरीर दी।
- प्रियंका की कार्डियो पल्मोनरी फेल होने से मौत की बात कही गई।

लखनऊ। थाईलैंड से प्रियंका शर्मा का शव मंगलवार रात अमौसी एयरपोर्ट पहुंचा। पीजीआई पुलिस ने भी मामले की विवेचना शुरू कर दी है। इंस्पेक्टर ने प्रियंका के पति आरोपी डॉ. आशीष श्रीवास्तव से पूछताछ कर बयान दर्ज किए। आरोपी ने बाथटब में डूबने से ही मौत होने की बात दोहराई है। डीसीपी पूर्वी शशांक सिंह ने बताया कि प्रियंका के पिता सत्यनारायण शर्मा ने पोस्टमार्टम कराने की अर्जी दी है। जरूरत पड़ने पर विधिक राय भी ली जाएगी और पोस्टमार्टम भी कराया जाएगा। सत्यनारायण शर्मा ने बताया कि चार जनवरी को बेटी थाईलैंड गई थी। 14 जनवरी को लौटना था, लेकिन बेटी की जगह उसका शव आया। परिजनों ने बताया कि मंगलवार रात शव एयरपोर्ट पर आ गया। परिजन शव लेने जा रहे थे, लेकिन पुलिस ने मना कर दिया। बुधवार सुबह आशीष को शव दिया जाएगा। सत्यनारायण ने इंस्पेक्टर पीजीआई को पोस्टमार्टम कराने के लिए पत्र दिया है। पुलिस बुधवार को फिर से पोस्टमार्टम कराएगी। रिपोर्ट के आधार पर आगे की कार्रवाई होगी।

थाईलैंड के डॉक्टरों ने मौत का कारण कार्डियोपलमोनरी फेल होना बताया

थाईलैंड पुलिस ने घटना के बाद शव का पोस्टमार्टम कराया था। वहां के डॉक्टरों ने पोस्टमार्टम रिपोर्ट में मौत का कारण कार्डियोपलमोनरी फेल होना बताया है। व्हाट्सएप पर परिजनों को इसकी कॉपी भी भेजी गई है। परिजनों का कहना है कि थाईलैंड की रिपोर्ट पर उन्हें भरोसा नहीं है। लखनऊ पुलिस मामले की पड़ताल करे तो सच्चाई सामने आ जाएगी।

अक्तूबर में हुई थी प्रियंका की मां की मौत, मन बहलाने के नाम पर ले गया था

प्रियंका की मां की बीमारी के कारण अक्तूबर 2024 में मौत हो गई थी। इसके बाद से वह काफी तनाव में थीं। सत्यनारायण का आरोप है कि इसी बात का फायदा उठाकर आशीष मन बहलाने के नाम पर प्रियंका को थाईलैंड ले गया था। उनका कहना है कि बाथटब में डूबने से मौत होने की बात गले नहीं उतर रही है। इस पर बिल्कुल भी भरोसा नहीं हो रहा है। उन्हें इंसाफ चाहिए।

ये है मामला

प्रियंका शर्मा की थाईलैंड के एक होटल में संदिग्ध हालात में मौत हो गई थी। उनके डॉक्टर पति आशीष श्रीवास्तव उन्हें व बेटे प्रियांश (03) को लेकर चार जनवरी को थाईलैंड गए थे। सेक्टर 16 बी वृंदावन योजना में रहने वाले प्रियंका के पिता सत्यनारायण शर्मा ने दामाद पर बेटी की हत्या का आरोप लगाया है। आशीष ने उन्हें आठ जनवरी को तड़के तीन बजे फोन कर प्रियंका के बाथटब में डूबने से मौत की सूचना दी थी। आशीष 10 जनवरी को बेटे के साथ देश लौट आया था। पीजीआई थाने की पुलिस उरई मेडिकल कॉलेज में कार्यरत डॉ. आशीष के खिलाफ हत्या का केस दर्जकर छानबीन कर रही है।

संभल में 47 साल बाद हिंदू परिवार को मिली अपनी जमीन

1978 के दंगे के बाद नरौली चला गया था पीड़ित परिवार

संभल। हिंदू परिवार की जमीन पर मिला कब्जा मिल गया है। इस जमीन पर कब्जा किया गया था। इस जमीन को विद्यालय की जमीन में शामिल कर दिया गया था। संभल कोतवाली क्षेत्र के मोहल्ला जगत में हिंदू (माली) परिवार की लाखों रुपये की जमीन पर दूसरे समुदाय के लोगों का कब्जा मिला है। यह जमीन 10वीं कक्षा तक संचालित आजाद जन्नत निशा कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के परिसर में है। पीड़ित परिवार के साथ पहुंचीं एसडीएम वंदना मिश्रा ने खतौनी के आधार पर करीब डेढ़ बीघा जमीन को चिह्नित कराया। वहीं, दूसरी ओर विद्यालय प्रबंधक डॉ. शाजेव की ओर से दावा किया है कि यह जमीन 1971 से 1976 के बीच संस्था के नाम खरीदी गई थी। जिसके बैनामे भी कराए गए हैं। बनियाठेर थाना क्षेत्र के कस्बा नरौली निवासी रघुनंदन का परिवार 1978 तक संभल के महमूद खां सराय में रहता था। 1978 में दंगा हुआ तो नरौली जाकर बस गए थे। पुश्तैनी जमीन मोहल्ला जगत में थी। जिसमें फूलबाग हुआ करता था। रघुनंदन का आरोप है कि उनकी पुश्तैनी जमीन पर दूसरे समुदाय के कुछ लोगों ने कब्जा कर लिया और विद्यालय की जमीन में शामिल कर दिया। बताया कि इसकी शिकायत कई बार की लेकिन कहीं कोई सुनवाई नहीं हुई। डीएम डॉ. राजेंद्र पैंसिया से शिकायत की तो उन्होंने जांच के लिए आदेश किए। इसी क्रम में उनकी जमीन को एसडीएम द्वारा चिह्नित कराया गया है। एसडीएम का कहना है कि खतौनी के अनुसार तो पीड़ित परिवार की दो बीघा जमीन होनी चाहिए लेकिन मौके पर डेढ़ बीघा जमीन मिली है। उसको चिह्नित करा दिया गया है। विद्यालय प्रबंधन समिति अभी तक कोई दस्तावेज नहीं दिखा सकी है।

1968 से वित्तविहीन संस्था द्वारा संचालित होता है विद्यालय

प्रबंधक डॉ. शाजेव ने बताया कि उनका विद्यालय वित्तविहीन संस्था द्वारा संचालित होता है। इसकी स्थापना 1968 में की गई थी। उसी समय 1971, 1972 और 1976 में अलग–अलग जमीनों के बैनामे कराए गए थे। जिसमें कुछ जमीन का दाखिल खारिज भी नहीं हुआ था। बताया कि संस्था के नाम ही जमीन का बैनामा किया गया था। करीब छह बीघा जमीन में विद्यालय संचालित होता है। जिधर जमीन चिह्नित की गई है उधर मैदान का हिस्सा है।

महाकुंभ में भक्ति और अध्यात्म का अद्भुत संगम! अमृत स्नान

महाकुंभ की तस्वीरें

3.5 करोड़ श्रद्धालुओं ने लगाई डुबकी

प्रयागराज। देश ही नहीं, एशिया से लेकर यूरोप तक के संस्कृति प्रेमी एक तट पर पुण्य की डुबकी लगाने और उस दुर्लभ घड़ी का साक्षी बनने के लिए उमड़ पड़े। आस्था की लहरें हिलोरें मारने लगीं। तीर्थराज में उजाले की एक किरण तक नहीं निकली थी कि हाड़ कंपा देने वाली ठंड के बीच महाकुंभ नगर में श्रद्धालुओं का जनसैलाब उमड़ पड़ा।

प्रयागराज। तीर्थराज प्रयाग में सूरज की पहली किरण के निकलने से पहले ही घने कोहरे और कड़कड़ाती ठंड के बीच मकर संक्रांति के पावन पर्व पर महाकुंभ नगर में श्रद्धालुओं का जनसैलाब उमड़ पड़ा। महाकुंभ के प्रथम अमृत स्नान पर्व पर पूरी दुनिया भक्ति की त्रिवेणी में समा गई। सनातन परंपरा का निर्वहन करते हुए अखाड़ों ने संगम में दिव्य–भव्य अमृत स्नान किया। भाला, त्रिशूल और तलवारों के साथ बुद्ध कला का अद्भुत प्रदर्शन करते हुए घोड़े और रथों पर सवार होकर शोभायात्रा के साथ पहुंचे नागा साधु, संतों की दिव्यता और करतब देखकर श्रद्धालु निहाल हो उठे।

भक्ति की लहरों में समाई दुनिया...आचार्यों मंडलेश्वरों, महामंडलेश्वरों की छटा

देश ही नहीं, एशिया से लेकर यूरोप तक के संस्कृति प्रेमी एक तट पर पुण्य की डुबकी लगाने और उस दुर्लभ घड़ी का साक्षी बनने के लिए उमड़ पड़े। आस्था की लहरें हिलोरें मारने लगीं। तीर्थराज में उजाले की एक किरण तक नहीं निकली थी कि हाड़ कंपा देने वाली ठंड के बीच महाकुंभ नगर में श्रद्धालुओं का जनसैलाब उमड़ पड़ा। अमृत स्नान के लिए देश–विदेश से करोड़ों लोग गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम पर पहुंचे। पवित्र स्नान का यह दृश्य भारतीय संस्कृति और परंपरा की गहराई को दर्शाता नजर आ रहा था। सबसे पहले अखाड़ों का शाही स्नान हुआ। पंचायती निर्वाणी अखाड़े के नागा साधुओं ने भाला, त्रिशूल और तलवारों के साथ अपने शाही स्वरूप में अमृत स्नान किया। साधु–संत घोड़े और रथों पर सवार होकर शोभायात्रा में शामिल हुए। उनके साथ चल रही भजन मंडलियों और श्रद्धालुओं के जयघोष ने माहौल को और दिव्य बना दिया। इससे पहले, महाकुंभ के प्रथम स्नान पर्व पौष पूर्णिमा पर 1.75 करोड़ लोगों ने पुण्य की डुबकी लगाई थी।

महानिर्वाणी अखाड़े ने सबसे पहले लगाई डुबकी

सबसे पहले रथ पर सवार होकर महानिर्वाणी अखाड़े के नागा संन्यासी और महामंडलेश्वर अमृत स्नान के लिए पहुंचे। उनके पोछे भस्म से लिपटे अटल अखाड़े के नागा तलवार, भालों के साथ जयकारा लगाते चल रहे थे। सबसे अंत में 3:50 बजे निर्मल अखाड़े के संतों ने स्नान किया।

त्रिवेणी की गोद में बच्चों सी अठखेलियां

प्रथम अमृत स्नान के दौरान नागा साधुओं ने पारंपरिक और अद्वितीय गतिविधियों से सभी का ध्यान आकर्षित कर लिया।

ज्यादातर अखाड़ों का नेतृत्व कर रहे नागा साधु भाले और तलवारें लहराते हुए युद्ध कला का प्रदर्शन करते संगम तट पर पहुंचे।

स्नान के लिए निकली अखाड़ों की शोभायात्रा में सैकड़ों नागा घोड़ों पर सवार होकर पहुंचे। जटाओं में फूल, मालाएं, हवा में त्रिशूल लहराते और नगाड़े बजाते हुए पहुंचे इन साधुओं ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

साधुओं ने 21 श्रृंगार के साथ पहली डुबकी लगाई। हिमालय की कंदराओं, मठों, मंदिरों में रहने वाले धर्मरक्षक नागा मां गंगा की गोद में बच्चों की तरह अठखेलियां करते नजर आए।

महिला नागा संन्यासी भी जुटीं

तप व योग में लीन रहने वाली महिला नागा संन्यासियों की भी बड़ी संख्या में मौजूदगी रही।

नागा साधुओं ने अनुशासन व प्रदर्शन से दुनियाभर को यह संदेश दिया... महाकुंभ सिर्फ धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि मनुष्य के आत्मिक और प्राकृतिक मिलन का भी उत्सव है।

चहुंओर श्रद्धालु

सिर पर गठरी, बगल में झोला लेकर आधी रात से ही गंगा की तरफ श्रद्धालु लपकते बढ़ रहे थे। नागवासुकि मंदिर और संगम क्षेत्र में तड़के से ही सड़कों पर सिर्फ सिर ही सिर नजर आने लगे। संगम की ओर बढ़ने वाली सभी सड़कें श्रद्धालुओं से भरी नजर आ रही थीं।

घाटों से लेकर पांटून पुलों तक चाक–चौबंद सुरक्षा

हर मार्ग पर बैरिकेडिंग लगाकर वाहनों की जांच की जाती रही। चप्पे–चप्पे पर पुलिस और अर्ध सैनिक बलों की तैनाती रही। पुलिस टीम ने घोड़े के साथ मेला क्षेत्र में पैदल मार्च किया और अखाड़ों के अमृत स्नान के लिए रास्ता खाली कराते रहे।

2.60 करोड़ श्रद्धालुओं ने शाम चार बजे तक संगम में लगाई पुण्य की डुबकी

12 किमी लंबे घाटों पर प्रथम अमृत स्नान पर्व पर आस्थावानों ने लगाई डुबकी

661 किमी लंबे चकर्ड प्लेट मार्गों पर समूचे विश्व के लोगों के उमड़ने से महाकुंभ हुआ गुलजार

25 सेक्टर में बसे महाकुंभ मेला की बढ़ी रंगत

30 पांटून पुलों पर सुबह से रात तक लगी रहीं लंबी कतारें

बीमार पड़ीं लॉरेन पॉवेल जॉब्स नहीं लगा सकी पुण्य की डुबकी

कल्पवास के लिए आई अमेरिका की अरबपति महिला उद्यमी लॉरेन पॉवेल जॉब्स बीमार पड़ गई हैं। निरंजनी अखाडे के आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी कैलाशानंद गिरि ने बताया कि लॉरिन के हाथ में चकत्ते पड़ गए हैं। इस वजह से वह अमृत स्नान नहीं कर सकी। संगम की रेती पर कड़ाके की ठिठुरन और बिगड़े मौसम के बीच उनकी बीमारी की वजह एलर्जी सामने आई है।

यति नरसिंहानंद के कक्ष के बाहर पकड़ा गया संदिग्ध

जूना अखाड़े के स्वामी यति नरसिंहानंद के कक्ष के बाहर सोमवार देर रात संदिग्ध युवक पकड़ा गया। पूछताछ पर उसने खुद को एटा निवासी अयूब बताया। अनुयायियों ने उसे पुलिस के हवाले कर दिया। यति नरसिंहानंद सेक्टर–20 स्थित दूधेश्वरनाथ मठ में ठहरे हैं। उनकी जनसंपर्क अधिकारी डॉ. उदिता ने बताया कि सोमवार रात संदिग्ध युवक उनके कक्ष के बाहर तक पहुंच गया।

सीएम योगी ने दी बधाई

बोले– इसरो की सफलता अंतरिक्ष की दिशा में लंबी छलांग

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इसरो को बधाई देते हुए कहा कि यह भारत के लिए गौरव का क्षण है। इसरो स्पेस डॉकिंग हासिल करने वाला दुनिया का चौथा देश बन गया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इंडियन स्पेस रिसर्च आर्गेनाइजेशन (इसरो) को स्पेस डॉकिंग हासिल करने पर बधाई दी। सीएम ने अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा कि यह इसरो के लिए ऐतिहासिक उपलब्धि है। यह देश (भारत) के लिए गौरव का क्षण है।

यह अंतरिक्ष क्षमताओं की दिशा में लंबी छलांग

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट कर स्पेस डॉकिंग हासिल करने पर टीम इसरो को बधाई दी। उन्होंने लिखा कि इस उपलब्धि के साथ टीम इसरो स्पेस डॉकिंग हासिल करने वाला दुनिया का चौथा देश बन गया है। यह हमारी अंतरिक्ष क्षमताओं की दिशा में लंबी छलांग है। स्पेस डॉकिंग प्रक्रिया को काफी सतर्कता के साथ लॉन्च किया गया।

इसरो के प्रतिभाशाली वैज्ञानिकों के समर्पण व त्याग से मिली उपलब्धि

सीएम ने लिखा कि यह उपलब्धि भारत के लिए मील का पत्थर है। यह इसरो के प्रतिभाशाली वैज्ञानिकों के समर्पण और त्याग से संभव हो पाया है। यह उनकी विशेषज्ञता को भी प्रदर्शित करता है। यह भारत के लिए गौरव का क्षण है। जय हिंद! सीएम ने एक्स पर आगे लिखा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने पिछले दशक में स्पेस टेक्नोलॉजी में अद्वितीय उपलब्धियां देखी हैं। भारत ग्रहों के बीच रिसर्च से लेकर रिकार्ड तोड़ने वाले उपग्रहों को लॉन्च करने और आज की ऐतिहासिक स्पेस डॉकिंग सफलता हासिल करने के साथ स्पेस रिसर्च को आकार दे रहा है।

सैफ अली खान पर जानलेवा हमला

मुंबई में अभिनेता सैफ अली खान के घर में घुसकर हमला

बांद्रा स्थित आवास पर देर रात घटना, पुलिस जांच कर रही

चोरी के लिए घुसे शख्स से हाथापाई, कुछ परिजन घर में मौजूद थे

लीलावती अस्पताल में इलाज जारी, हालत खतरे से बाहर

मुम्बई। सैफ अली खान के बांद्रा वाले घर में घुसे अज्ञात शख्स ने उन पर हमला कर दिया। उन्हें मुंबई के लीलावती अस्पताल में भर्ती कर दिया गया है। बॉलीवुड अभिनेता सैफ अली खान पर बुधवार देर रात उनके ही घर में चाकू से हमला किया गया। इसके बाद उन्हें मुंबई के लीलावती अस्पताल में भर्ती कराया गया। उनकी हालत खतरे से बाहर बताई जा रही है। खबरों की मानें तो सैफ का ऑपरेशन हो गया है। कॉस्मैटिक सर्जरी भी हो रही है। ऑपरेशन में सैफ के घाव से तीन इंच की नुकीली चीज भी निकाली गई है। खबरों की मानें तो स्क्वायड डॉग को सैफ अली खान के अपॉर्टमेंट में जांच के लिए लाया गया है।

शुरुआती जानकारी के मुताबिक, एक अज्ञात शख्स सैफ के घर में घुसा। दोनों के बीच हाथापाई हुई। घटना के समय अभिनेता के कुछ पारिवार के अन्य सदस्य भी घर में मौजूद थे। कहा यह भी जा रहा है कि घर में घुसे शख्स की नौकरानी से बहस हुई। जब अभिनेता ने बीच–बचाव कर व्यक्ति को समझाने और शांत करने की कोशिश की, तो उसने सैफ अली खान पर हमला कर दिया। घटना की सूचना मिलने के बाद बांद्रा पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू की। करीना की टीम ने कहा है कि घर में सब ठीक हैं। पुलिस ने बताया कि घटना आधी रात को अभिनेता के बांद्रा स्थित घर पर हुई। हमले के दौरान सैफ के हाथ, रीढ़ की हड्डी और गर्दन पर घाव आए हैं। अस्पताल में सैफ अली खान का अस्पताल में ऑपरेशन चल रहा है। उनकी पत्नी करीना कपूर खान भी उनसे मिलने सुबह 4.30 बजे अस्पताल पहुंची हैं।

अजब-गजब साधुओं की सेना कभी बाहर क्यों नहीं दिखती...

प्रयागराज। महाकुंभ में नागा या अन्य अजब–गजब साधुओं की सेना आखिर बाहरी दुनिया में क्यों नहीं दिखती। यहां स्नान के लिए आने वाले लोगों के मन में ये सवाल तो उठता ही है। आखिर ये आकर्षण कैसा है...दूर–दूर तक संगम की पसरी रेत, साधुओं का रेला और डूबते सूरज की अरुणिमा में दीप्त चेहरे जो लंबे सफर के बाद क्लांत हो चले हैं। बड़े–छोटे, बच्चे, वृद्ध, धनाढ्य या केवल सिर पर गठरी लेकर बस एक कामना लेकर आने वाले की डुबकी तो लगानी ही है। गंगा–यमुना के संगम के साक्षी प्रयागराज में हर तरफ बस एक धुन गूंज रही है। महाकुंभ। मन में बहुत से सवाल उठते हैं, क्या यहां लोग मोक्ष की कामना लेकर आते हैं, या आते हैं अपने को पतित पाविनी गंगा और यमुना की धारा में फिर से निर्मल करने के लिए। या उनके मन में होता है उन साधुओं की एक झलक देखने का सपना, जिन्हें वे यहां के अलावा कहीं नहीं पाते। कभी आपने सोचा कि यहां सैकड़ों की संख्या में दिखने वाले नागा या अन्य अजब–गजब साधुओं की सेना कभी बाहर क्यों नहीं दिखती...या बस यहां हम खुद को खाली करने आते हैं। एक बार फिर उस निर्मल मन के साथ जीने के लिए जो जिंदगी की आपाधापी में कहीं न कहीं पापी बन बैठा।

देखा जाए तो ये बस सवाल हैं, इनका जवाब जानना है तो महाकुंभ की रेत पर दूर तक फैले संगम के विस्तार को समझना होगा। शताब्दियों से यहां हर छह या बारह साल में माघ के सर्द महीने में श्रद्धालु जुटते आए हैं। इतिहास के पन्ने पलटें तो पाएंगे कि यह सिलसिला बहुत पुराना है। कुंभ का दर्शन जटिल है तो बहुत सरल भी। बड़े हनुमान मंदिर के पास सिर पर जौ उगाए बाबा अमरजीत कहते हैं, विश्व का कल्याण हो यही हमारा उद्देश्य है। वे सोनभद्र ये यहां आए हैं और यहां कल्पवास यानी कुंभ की अवधि में संगम तट पर रहेंगे। वहीं जौनपुर से आए डीके श्रीवास्तव दूर संगम में दिख रही नाव पर नजर जमाकर कहते हैं, यहां आना यानी तर जाना। उनके लिए कुंभ आना किसी भी तीर्थयात्रा से बढ़कर है। यहां आकर जो भाव मिलता है वैसा और कहीं नहीं। संगम तट पर मंडराते पक्षियों को निर्निमेष देख रहे बाबा रामेश्वर दास की कहानी भी संन्यास से मोक्ष के मार्ग की है। दरभंगा में बस मेरा जन्म हुआ, अब ने राग है न विराग।...बस साधना है। कोट और टाई पहने लगभग 60 साल के राधेश्याम पांडेय श्रद्धालुओं की बेढब सी भीड़ में कुछ अलग से दिखे। पूछने पर बताया, इलाहाबाद हाईकोर्ट में एक वकील के यहां मुंशी हैं। यहां क्यों आए। इस सवाल का जवाब जरा ठहरकर देते हैं, आता हूं तो अच्छा लगता है। आपका तो शहर ही है आते ही रहते होंगे। इस पर कहते हैं, हां यहां आकर मन ठहर सा जाता है। संगम की रेती पर गंगाजल भरने के लिए केन बेचने वाले संजय शाह कहते हैं, कुंभ में यहां आने से पुण्य मिलता है। कैसे पता, इस पर कहते हैं कि उन्हें यह एक बाबा ने बताया।

...अतीत से जुड़ी आध्यात्मिक यात्रा

...तो फिर आखिर क्या है कुंभ । दरअसल कुंभ एक ऐसी आध्यात्मिक यात्रा है जिससे गुजरकर उन सभी सवालों का जवाब मिलता जो मन में उठते हैं। यह एक विश्वास की यात्रा है। जिसमें संस्कृति, सभ्यता और भक्ति के रंग घुले हुए हैं। न जाने कब से प्रयाग की पवित्र भूमि पर लाखों लोग बिना किसी निमंत्रण के जुटते रहे हैं। कुंभ मेला लोगों का ही संगम नहीं कराता बल्कि भारतीय भाषाओं और लोक–संस्कृतियों का संगम भी बन जाता है।

सद्भाव और संन्यास का संदेश देते साधु

अपने अखाड़े में धूनी रमाये बैठे उस नागा साधु की दृष्टि में कुछ ऐसा था जिसने कुंभनगरी के काली मार्ग से गुजरते हुए जैसे बांध लिया। उनके पास जाकर बातचीत का सिलसिला शुरू हो गया। संन्यास क्यों लिया और वो भी नागा साधु बनकर। इस सवाल पर वे कहते हैं, हम तो मरकर जन्मे हैं, यह नागा साधु का चोला तो अपना पिंडदान करने के बाद ही मिलता है। घर, नाता, दुनियादारी से अब कैसा वास्ता। अब तो यही हमारी दुनिया है। पहले अखाड़ों का काम आक्रांताओं से आमजन की रक्षा करना होता था, अब तरीके बदल गए हैं। अब साधु का काम समाज और दुनिया में सद्भाव और शांति लाना है। बताते हैं कि उनका अखाड़ा स्कूल चलाता है और कई तरह के धर्मार्थ कार्य करता है।

मैं अपने इस फैसले से खुश हूं

हर्षा ने बताया– मैं गुरुदेव से डेढ़ साल पहले मिली थी, जिन्होंने मुझे बताया कि भक्ति के साथ–साथ अपने काम को भी संभाला जा सकता है। मगर मैंने खुद से फैसला लिया कि मैं अपने पेशेवर जीवन को त्याग दूंगी और पूरी तरह से भक्ति में लीन रहूंगी। मैं अपने इस फैसले से खुश हूं।

उत्तराखंड में रहती हैं हर्षा, इंस्टाग्राम पर 10 लाख फालोअर्स

हर्षा मूलरूप से मध्यप्रदेश के भोपाल की रहने वाली हैं, लेकिन उत्तराखंड में रहती हैं। वह पीले वस्त्र, रुद्राक्ष माला और माथे पर तिलक धारण करती हैं। उनके इंस्टाग्राम पर 10 लाख से अधिक फॉलोअर्स हैं। हर्षा इंस्टाग्राम पर धार्मिक और आध्यात्मिक विषयों से जुड़े कंटेंट साझा करती हैं। वह निरंजनी अखाड़े के महामंडलेश्वर स्वामी स्वामी कैलाशानंद गिरि महाराज की शिष्या हैं।

हर्षा ने बताया– भक्ति और ग्लैमर में कोई विरोधाभास नहीं है। मैंने अपनी पुरानी तस्वीरों के बारे में भी स्पष्ट किया है। अगर मैं चाहती तो उन्हें डिलीट कर सकती थी, लेकिन ऐसा नहीं किया। यह मेरी यात्रा है। मैं युवाओं को बताना चाहती हूं कि किसी भी मार्ग से आप भगवान की ओर बढ़ सकते हैं।

हर्षा रिछारिया पर छिड़ा विवाद

तस्वीर निरंजनी अखाड़े की पेशवाई के समय की है

प्रयागराज। प्रयागराज महाकुंभ में पेशवाई के दौरान मॉडल को रथ पर बैठाने को लेकर विवाद छिड़ गया है। शांभवी पीठाधीश्वर स्वामी आनंद स्वरूप महाराज ने कहा– यह उचित नहीं है। इससे समाज में गलत संदेश फैलता है। धर्म को प्रदर्शन का हिस्सा बनाना खतरनाक है। साधु–संतों को इससे बचना चाहिए, नहीं तो इसके गंभीर परिणाम भुगतने होंगे। दरअसल, 4 जनवरी को महाकुंभ के लिए निरंजनी अखाड़े की पेशवाई निकली थी। उस वक्त 30 साल की मॉडल हर्षा रिछारिया संतों के साथ रथ पर बैठी नजर आई थीं।

मैंने सुकून की तलाश में यह जीवन चुना

पेशवाई के दौरान हर्षा रिछारिया से पत्रकारों ने साध्वी बनने पर सवाल किया था। इस पर हर्षा ने बताया था कि मैंने सुकून की तलाश में यह जीवन चुना है। मैंने वह सब छोड़ दिया, जो मुझे आकर्षित करता था। इसके बाद हर्षा सुर्खियों में आ गईं। वह ट्रोलर्स के भी निशाने पर हैं। मीडिया चौनल ने उन्हें सुंदर साध्वी का नाम भी दे दिया। इसके बाद हर्षा फिर से मीडिया के सामने आईं। कहा– मैं साध्वी नहीं हूं। मैं केवल दीक्षा ग्रहण कर रही हूं।

बेज साड़ी में दिखा करिश्मा तन्ना का खूबसूरत अंदाज, देखें तस्वीरें

14 साल की उम्र में ही वरुण धवन ने किया ऐसा काम

एंटरटेनमेंट डेस्क। वरुण धवन महज 14 साल के थे, तब वह सलमान खान की फिल्म श्मुझसे शादी करोगीश के सेट पर गए थे। इतनी छोटी उम्र में बेबी जॉन अभिनेता ने ऐसा काम किया कि उनके फैन बन गए यह बॉलीवुड अभिनेता। वरुण धवन बॉलीवुड के पसंदीदा अभिनेताओं में से एक हैं। वह इन दिनों अपनी एक्शन ड्रामा फिल्म बेबी जॉन को लेकर लगातार चर्चा में बने हुए हैं। अपनी बेहतरीन कॉमिक टाइमिंग के लिए मशहूर दिग्गज अभिनेता भी बन चुके हैं बेबी जॉन के फैन।

वरुण की इंस्टा स्टोरी

15 जनवरी को वरुण धवन ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर राजपाल यादव के एक इंटरव्यू वीडियो क्लिप शेयर की है, जिसमें राजपाल यादव, वरुण के प्रति आभार व्यक्त करते नजर आ रहे हैं। वरुण ने लिखा, षराजपाल यादव सर आपसे मैंने बहुत सीखा है, इन दयालु शब्दों के लिए धन्यवाद।

राजपाल यादव ने की वरुण की तारीफ

हाल ही में अक इंटरव्यू के दौरान राजपाल यादव ने बॉर्डर 2 अभिनेता के साथ काम करने के अपने अनुभव पर शेयर किया। उन्होंने कहा कि समर्पित और बेहतरीन अभिनेता के साथ काम करना उनके लिए बहुत अच्छा अनुभव रहा। राजपाल यादव ने याद किया कि वरुण 14–15 साल की उम्र से ही बेहद शांत लड़के रहे हैं। मैंने उन्हें श्मुझसे शादी करोगीश के अलावा भी डेविड धवन की कई फिल्मों के सेट के दौरान देखा है।

पिता की विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं वरुण

राजपाल यादव ने वरुण के काम को लेकर कहा, वरुण में एक कम्पलीट स्टार हैं, जो अच्छा नाच लेते हैं साथ ही खूब अच्छी कॉमेडी भी कर लेते हैं। उनका मासूम चेहरा, मेहनती और संस्कारी अभिनेता अपने पिता डेविड धवन द्वारा बनाई गई विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं।

कई फिल्में एक साथ कर चुके हैं वरुण-राजपाल

राजपाल यादव ने कहा कि वह इस युवा अभिनेता को 10 में से 10 अंक देंगे। उन्होंने आगे जोर देकर कहा कि वरुण ने हमेशा अपने अभिनय में बहुमुखी प्रतिभा का प्रदर्शन किया है, चाहे स्टूडेंट ऑफ द ईयर के बॉक्स ऑफिस कलेक्शन कुछ भी रहा हो। राजपाल यादव और वरुण धवन ने श्मैं तेरा हीरोश, जुड़वा 2, कुली नंबर 1 जैसी फिल्मों में साथ काम किया है।

प्यार के बीच धर्म बना दीवार, फलक नाज ने इस वजह से खोई मोहब्बत

ओटीटी प्लेटफार्म पर रिलीज के लिए तैयार

एंटरटेनमेंट डेस्क, नई दिल्ली। एडम जे ग्रेव्स के निर्देशन में बनी आस्कर–शार्टलिस्टेड शार्ट फिल्म अनुजा को अब ओटीटी पर स्ट्रीम होने वाली है। फिल्म को प्रियंका चोपड़ा, मिंडी कलिंग और अकादमी पुरस्कार विजेता गुनीत मोंगा की तरफ से खूब सपोर्ट मिला है। फिल्म की निर्माता सुचित्रा मट्टई निर्देशक एडम जे ग्रेव्स की पत्नी हैं। अनुजा को 97वें एकेडमी अवाईस में बेस्ट लाइव एक्शन शार्ट फिल्म कैटेगरी के लिए चुना गया है।

प्रियंका चोपड़ा अब एक्टर के साथ फिल्मों को प्रोड्यूस करने का काम भी करने लगी हैं। एक्ट्रेस से जुड़ी खबर आ रही है कि प्रियंका चोपड़ा मिंडी कलिंग और गुनीत मोंगा की ओर की तरफ से ऑस्कर शॉर्टलिस्टेड शॉर्ट फिल्म जल्द ही ओटीटी रिलीज की जाने वाली है। एक्ट्रेस ने सोशल मीडिया पर खबर पर रिएक्ट करते हुए खुशी भी जाहिर की है।

आस्कर-शार्टलिस्टेड फिल्म है अनुजा
अब फिल्म को मिली ओटीटी रिलीज
प्रिंयका चोपड़ा ने जाहिर की खुशी

स्मिता पाटिल के साथ अच्छी रही जूही की बान्डिंग

@ राज बब्बर–स्मिता पाटिल, जूही बब्बर –

मुम्बई। अभिनेता राज बब्बर ने पहली शादी नादिरा से शादी की। इनके दो बच्चे–बेटी जूही बब्बर और बेटा आर्य बब्बर हुआ। पहले से शादीशुदा होते हुए राज बब्बर अभिनेत्री स्मिता पाटिल के करीब आए। फिर 1983 में इन्होंने शादी रचा ली। हाल ही में जूही बब्बर ने बताया कि उन्हें अपने पिता की दूसरी शादी का सच कब पता चला? इसके अलावा उन्होंने राज बब्बर और स्मिता पाटिल के रिश्तों को लेकर भी बात की।

सच सुनते ही टूट गया दिल

जूही बब्बर के मुताबिक जब उन्हें पिता की दूसरी शादी के बारे में पता चला तो वह महज सात साल की थीं। जूही ने लहरें टीवी से बातचीत में यह बात करी। जूही के मुताबिक जब उनके पिता राज बब्बर ने उन्हें दूसरी पत्नी के बारे में जानकारी दी तो वे सिर्फ सात साल की थीं। राज बब्बर ने बेटी को अपनी दूसरी शादी और पत्नी के बारे में बताया और बिठाकर पूरी बात समझाई। जूही बब्बर ने बताया कि यह सच सुनते ही उनका दिल टूट गया था। राज बब्बर ने नादिरा से शादी की। फिर 1979 में जूही बब्बर का जन्म हुआ। इसके बाद राज बब्बर अभिनय में करियर बनाने के लिए मुंबई आ गए और नादिरा को उनकी मां के पास छोड़ दिया। साल 1981 में कपल ने बेटे आर्य का स्वागत किया। अभिनय की दुनिया में काम करते हुए राज बब्बर की करीबी स्मिता पाटिल से बढ़ीं और फिर 1983 में इन्होंने शादी रचा ली। राज बब्बर ने बाद में मीडिया बातचीत में यह कहा कि उनकी पहली पत्नी नादिरा, दूसरी पत्नी स्मिता के साथ उनके रिश्ते को अच्छी तरह समझती थीं। दिलचस्प बात यह है कि उनकी बेटी जूही बब्बर और स्मिता पाटिल के बीच भी काफी करीबी रिश्ता रहा। ”

टी-सीरीज के आफिस के बाहर दिखीं धनश्री

एंटरटेनमेंट डेस्क। कोरियोग्राफर धनश्री को टी–सीरीज के ऑफिस में फोटोग्राफर ने कैमरे में कैद किया। धनश्री वर्मा ने एक खूबसूरत ब्लैक बॉडीकॉन स्कर्ट पहनी हुई थी, जिसके साथ उन्होंने सफेद शर्ट और चश्मा कैरी किया हुआ था। कोरियोग्राफर धनश्री वर्मा अपने क्रिकेटर पति युजवेंद्र चहल के साथ तलाक की अफवाहों को लेकर सुर्खियों में हैं। अफवाहों के बीच, धनश्री ने अपनी पहली सार्वजनिक उपस्थिति दर्ज कराई और मुंबई में स्पॉट की गई। बॉडीकॉन ड्रेस में धनश्री बेहद खूबसूरत भी नजर आ रही थीं। कोरियोग्राफर का यह वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है, जिस पर लोगों की तरह–तरह प्रतिक्रिया मिल रही है।

वायरल हुआ धनश्री का वीडियो

कोरियोग्राफर धनश्री को टी–सीरीज के ऑफिस में फोटोग्राफर ने कैमरे में कैद किया। धनश्री वर्मा ने एक खूबसूरत ब्लैक बॉडीकॉन स्कर्ट पहनी हुई थी, जिसके साथ उन्होंने सफेद शर्ट और चश्मा कैरी किया हुआ था। फोटोग्राफर्स ने उन्हें प्रोडक्शन हाउस के पास अपनी कार से बाहर निकलते हुए देखा। कुछ तस्वीरें क्लिक करते हुए फोटोग्राफर्स ने उनको हैलो किया और उनसे बातचीत की।

धनश्री ने साधी चुप्पी

एक फोटोग्राफर ने बताया कि उनके हालिया पोस्ट पर कई कमेंट आए। उन्होंने धनश्री से पूछा षआपके पोस्ट पर बहुत से कमेंट आए। ष एक समय के बाद, उन्होंने फोटोग्राफर्स से अनुरोध किया कि वे उन्हें कैमरा बंद कर दें और कहा, बस ना। फोटोग्राफर्स ने तुरंत उनके अनुरोध का सम्मान किया और रिकॉर्डिंग बंद कर दी।

सोशल मीडिया पर मिली यह प्रतिक्रिया

वीडियो वायरल होते ही इसे नेटीजंस से मिली–जुली प्रतिक्रियाएं मिलीं। एक यूजर ने लिखा, यह लोग सोशल मीडिया पर अपना नुकसान कराकर फिर मीडिया से बचते हैं। दूसरे यूजर ने लिखा, उन्होंने खुद से क्या हासिल किया? एक और नेटिजन ने लिखा, ये सब युजी भाई की वजह से आपको मिला है। वहीं, कई लोगों ने धनश्री की तारीफ करते हुए लिखा, अच्छा है कि धनश्री काम पर पूरा फोकस कर रही हैं। दूसरे यूजर ने लिखा कि धनश्री कमबैक की पूरी तैयारी कर रही हैं।

टीम इंडिया की वुमन पावर

स्मृति मंधाना ने राजकोट में रचा इतिहास तोड़ा सबसे तेज शतक का रिकॉर्ड

स्मृति मंधाना ने आयरलैंड के खिलाफ तीसरे वनडे में 70 गेंद में शतक लगाकर इतिहास रच दिया है. स्मृति भारत की ओर से वनडे में सबसे तेज शतक लगाने वालीं महिला क्रिकेटर बन गई हैं. स्मृति ने 80 गेंद में 135 रन की पारी खेली. मंधाना ने वनडे सीरीज के तीसरे मैच में चौके और छक्कों की बारिश कर दी. उन्होंने इस दौरान 12 चौके और 7 छक्के लगाए.

विमेंस वनडे के हाईएस्ट स्कोर (टॉप-5)

टीम	स्कोर	खिलाफ	कब
न्यूजीलैंड	491/4	आयरलैंड	2018
न्यूजीलैंड	455/5	पाकिस्तान	1997
न्यूजीलैंड	440/3	आयरलैंड	2018
भारत	435/5	आयरलैंड	2025
न्यूजीलैंड	418	आयरलैंड	2018

साउथ अफ्रीकी बॉलर नॉर्त्या को बैक इंजुरी

चैंपियंस ट्राफी से हटे, जेराल्ड कूट्जी हो सकते हैं रिप्लेसमेंट

साउथ अफ्रीका के तेज गेंदबाज एनरिक नॉर्त्या बैक इंजरी की वजह से चैंपियंस ट्रॉफी से बाहर हो गए हैं। उन्होंने पिछले साल जून में खेले गए टी–20 वर्ल्ड कप के बाद से कोई इंटरनेशनल मैच नहीं खेला है। क्रिकेट साउथ अफ्रीका की ओर से जारी बयान में कहा गया है कि नॉर्त्या का सोमवार दोपहर को स्कैन किया गया था और 50 ओवर के टूर्नामेंट के लिए उनके समय पर ठीक होने की उम्मीद नहीं है। नॉर्त्या पाकिस्तान में ट्राई सीरीज से इंटरनेशनल क्रिकेट में वापसी करने वाले थे नॉर्त्या पाकिस्तान में फरवरी में वनडे की होने वाले ट्राई सीरीज से इंटरनेशनल क्रिकेट में वापसी करने वाले थे। वहीं नेट पर उनके पैर की अंगुली में चोट लग गई। उसके बाद से वह टी 20 लीग में भी प्रिटोरिया कैपिटल्स से एक भी मैच नहीं खेल पाए।

एनरिक नॉर्त्या का इंटरनेशनल करियर

टेस्ट
मैच-19 | विकेट-70
इकोनॉमी रेट- 3.67

वनडे
मैच-22 | विकेट-36
इकोनॉमी रेट-5.85

टी-20
मैच-42 | विकेट-53,
इकोनॉमी रेट-7.01

बीसीसीआई ने भारतीय खिलाड़ियों के लिए बनाए नए नियम

बीसीसीआई ने बनाया नया नियम

> पत्नी–गर्लफ्रेंड के बाद भारतीय खिलाड़ी इन लोगों को विदेश नहीं ले जा पाएंगे अपने साथ

पर्सनल काम के लिए लोगों को नहीं ले जा पाएंगे दौरे पर

स्पोर्ट्स डेस्क। बॉर्डर–गावस्कर ट्रॉफी में मिली शर्मनाक हार के बाद बीसीसीआई ने भारतीय खिलाड़ियों पर लगाम कसना शुरू कर दिया है। गुरुवार को खबर आई कि भारतीय टीम के खिलाड़ी अपने शेफ, हेयर स्टाइलिस्ट, पर्सनल सिक्योरिटी गार्ड, कुक को साथ नहीं ले जा सकेंगे। इससे पहले बीसीसीआई ने नया नियम बनाते हुए कहा कि खिलाड़ियों की पत्नी और गर्लफ्रेंड टीम के साथ यात्रा नहीं कर पाएंगी। भारतीय क्रिकेट टीम के खिलाड़ियों को बीसीसीआई ने बड़ा झटका देने की तैयारी कर ली है। हाल ही में बीसीसीआई ने खिलाड़ियों के परिवार के लिए कुछ नियम बनाए। अब खिलाड़ी अपने पर्सनल काम के लिए शेफ, हेयर स्टाइलिस्ट, पर्सनल सिक्योरिटी गार्ड, कुक को साथ नहीं ले जा सकेंगे।

> बीसीसीआई ने भारतीय खिलाड़ियों को एक और बड़ा झटका दिया है। हाल ही में समाप्त हुई मीटिंग में चर्चा के बाद यह खबर है कि भारतीय क्रिकेट टीम के खिलाड़ी अपने शेफ हेयर स्टाइलिस्ट पर्सनल सिक्योरिटी गार्ड कुक को साथ नहीं ले जा सकेंगे। इससे पहले बीसीसीआई ने खिलाड़ियों के परिवार के लिए नए नियम बनाए थे। इसके तहत खिलाड़ियों का परिवार पूरे दौरे पर उनके साथ नहीं रह पाएगा।

परिवार के लिए बनाया नया नियम

अब पूरे दौरे तक खिलाड़ियों के साथ नहीं रह पाएंगे। हाल ही में बीसीसीआई की मीटिंग में चर्चा हुई है। इससे पहले खिलाड़ियों की पत्नी और परिवार की यात्रा पर रोक लगाने का फैसला किया था। इसके तहत बीसीसीआई ने नया नियम बनाया कि अगर दौरा 45 दिन का है तो खिलाड़ियों की फैमिली या पत्नी उनके साथ 14 दिन तक ही रह पाएंगी। वहीं, अगर दौरा छोटा हुआ तो परिवार 7 दिन से ज्यादा नहीं रह पाएगा। सवाल ये है कि बीसीसीआई ने ये सब करने का फैसला क्यों किया है? आखिर बीसीसीआई को खिलाड़ियों के करीबियों से क्या दिक्कत आ गई?

चैंपियंस ट्राफी के लिए भारत की पासिबल टीम

वनडे वर्ल्ड कप के 11 खिलाड़ियों का खेलना कन्फर्म

स्पोर्ट्स डेस्क। चैंपियंस ट्रॉफी शुरू होने में करीब एक महीने का समय बाकी है। 8 में से 6 टीमों ने अपना स्क्वॉड रिलीज कर दिया है। जबकि भारत और पाकिस्तान ने प्ब से 19 जनवरी तक का समय मांग लिया। टीम इंडिया के वनडे स्क्वॉड में ज्यादातर प्लेयर्स लगभग तय है। माना जा रहा है कि ठब्ब् को तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह की फिटनेस रिपोर्ट आने का इंतजार है। रिपोर्ट्स के अनुसार बुमराह ग्रुप स्टेज नहीं खेल सकेंगे। मोहम्मद शमी ने इंजरी से उबरने के बाद अब तक इंटरनेशनल मैच नहीं खेला है, वहीं कुलदीप यादव ने भी पिछले दिनों सर्जरी कराई थी। तीनों ही प्लेयर्स का सिलेक्शन मैनेजमेंट के लिए सिरदर्द बना हुआ है।

स्ओरी में चैंपियंस ट्राफी के लिए टीम इंडिया

वनडे परफॉर्मेंस

सूर्यकुमार यादव
मैच 37 | रन 773
औसत 35.76
100/50 0/4

ईशान किशन
मैच 27 | रन 933
औसत 42.40
100/50 1/7

शार्दूल ठाकुर
मैच 47 | रन 329
इकोनॉमी 6.22
विकेट 65

का पासिबल स्क्वाड...
वनडे वर्ल्ड कप के 11 खिलाड़ियों का खेलना तय भारत ने 2023 का वनडे वर्ल्ड कप खत्म होने के बाद 6 ही वनडे खेले। इनमें भी सीनियर प्लेयर्स महज 3 का हिस्सा रहे। भारत ने वर्ल्ड कप में फाइनल को छोड़कर सभी मैच जीते थे। टूर्नामेंट के बाद हुए इतने कम मैचों को देखते हुए लगता है कि चौंपियंस ट्रॉफी की टीम भी वनडे वर्ल्ड कप टीम की तरह ही रहेगी। हालांकि, सूर्यकुमार यादव, ईशान किशान, शार्दूल ठाकुर और रविचंद्रन अश्विन इस टीम से बाहर हो सकते हैं। अश्विन रिटायर हो चुके हैं, वहीं शार्दूल को गौतम गंभीर के कोच बनने के बाद से टीम में नहीं चुना गया। दूसरी ओर सूर्या और ईशान खराब फॉर्म और व्यवहार के कारण वनडे टीम से अपना पत्ता कटवा चुके हैं। ऐसे में टीम मैनेजमेंट को इन्हीं प्लेयर्स के रिप्लेसमेंट ढूंढने के लिए ज्यादा दिमाग खपाना होगा।

जोकोविच सबसे ज्यादा ग्रैंडस्लैम मैच खेलने वाले खिलाड़ी बने

आस्ट्रेलियन ओपन में करियर का 430वां सिंगल्स मुकाबला खेला

मेलबर्न। नोवाक जोकोविच ने सबसे ज्यादा मैच खेलने के मामले में रोजर फेडरर को पीछे छोड़ा। डिफेंडिंग चैंपियन नोवाक जोकोविच ने पुर्तगाल के जैमे फारिया को हराकर ऑस्ट्रेलियन ओपन 2025 के तीसरे राउंड में जगह बना ली है। सर्बिया के स्टार टेनिस खिलाड़ी ने बुधवार को रॉड लेवर एरिना में फारिया को 6–1, 6–7, 6–3, 6–2 से हराया। जोकोविच का यह ग्रैंडस्लैम करियर का 430वां सिंगल्स मैच था। वे इस आंकड़े को छूने वाले पहले खिलाड़ी बन गए हैं। उन्होंने स्विस खिलाड़ी रोजर फेडरर (429) को पीछे छोड़ा। अमेरिका की सेरेना विलियम्स (423) लिस्ट में तीसरे नंबर पर है।

अल्कराज सीधे सेटों में जीते

4 बार के ग्रैंडस्लैम चैंपियन कार्लोस अल्काराज बुधवार को जीत के साथ तीसरे दौर में पहुंच गए। स्पेन के तीसरे सीड खिलाड़ी ने जापान के योशिहितो निशिओका को सीधे सेटों में हराया। उन्होंने मार्गरेट कोर्ट एरिना में खेले गए दूसरे राउंड के मुकाबले को 6–0, 6–1, 6–4 से जीता। यह मैच 81 मिनट तक चला।

दी नेक्स्ट पोस्ट
स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक बृजेन्द्र कुमार द्वारा फाइन ऑफसेट प्रिन्टर्स मदरसा हुसैनिया बिल्डिंग बक्सीपुर गोरखपुर से मुद्रित एवं 665 बी गंगा टोला, निकट जानकी बिल्डिंग मैटेरियल बसारतपुर पश्चिमी, गोरखपुर से प्रकाशित। पिनः– 273003
Tital code: UPHIN51019
बृजेन्द्र कुमार
मो0. नं0. 7307180148,9170772370
Email- thenextpost01@gmail.com
नोटः– समाचार पत्र से सम्बन्धित सभी वाद-विवाद गोरखपुर जिला न्यायालय के अन्तर्गत मान्य होगे।